(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 54, अंक 8, फरवरी, 2019
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

आबू रोड (शान्तिवन)- भारतीय थल सेना के अध्यक्ष जनरल बिपिन रावत तथा उनकी धर्मपत्नी मधुलिका रावत, राजयोगिनी दादी जानकी से मुलाकात के बाद ब्र.कु.निर्वैर भाई तथा ब्र.कु.आशा बहन के साथ समूह चित्र में।

देश की सेवा में जीवन समर्पित करने वाले शहीदों की याद में आयोजित श्रद्धांजलि सभा को सम्बोधित करते हुए भारतीय थल सेना के अध्यक्ष जनरल बिपिन रावत। मंचासीन हैं राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई तथा अन्य।

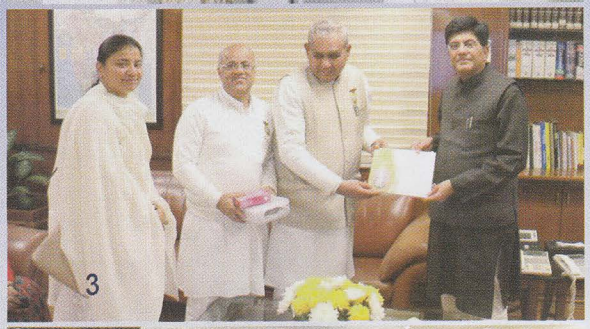

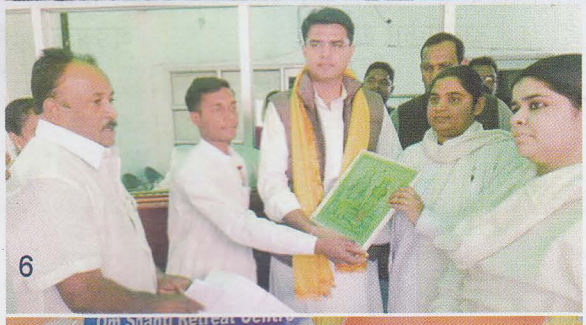

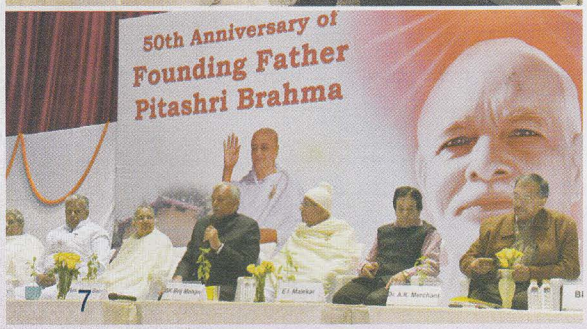

1.देहरादून- 'ग्लोबल इनलाइटनमेंट फॉर गोल्डन एज' विषयक कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए उत्तराखण्ड की राज्यपाल महामहिम बहन बेबी रानी मौर्या, संस्कृत स्कॉलर डॉ.बुद्धदेव शर्मा, ब्र.कु.मंजू बहन, ब्र.कु.मीना बहन तथा ब्र.कु. आरती बहन। **2.त्रिपुरा-** 'रि-इन्जीनियरिंग लाइफ' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुए महामहिम राज्यपाल भ्राता कप्तान सिंह सोलंकी, ब्र.कु.गोदावरी बहन, ब्र.कु.शीला बहन, ब्र.कु.मोहन सिंघल तथा ब्र.कु.भारतभूषण। **3.नई दिल्ली-** केन्द्रीय रेल राज्यमंत्री भ्राता पीयूष गोयल को सोविनियर भेंट करते हुए ब्र.कु.मृत्युंजय भाई। साथ में ब्र.कु.प्रकाश भाई तथा ब्र.कु.शिविका बहन। **4.राजविराज (नेपाल)-** उच्च अदालत के मुख्य न्यायाधीश भ्राता तिलप्रसाद श्रेष्ठ, अन्य न्यायाधीश गण क्रमशः भ्राता महेश पुडासैनी, भ्राता बालेन्द्र रूपाखेती, भ्राता शेखरचन्द्र अर्याल, भ्राता लेखनाथ पौडेल, भ्राता बिपुल न्यौपाने और भ्राता सिताराम मण्डल को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु.भगवती बहन, समाजसेवी भ्राता हरेकृष्ण प्रसाद सिंह तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में। **5.करनाल (सेक्टर-7)-** मारिशस के कार्यवाहक राष्ट्रपति भ्राता परमशिव पिल्ले व्यापुरी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.प्रेम बहन। साथ में हैं ब्र.कु.शिखा बहन तथा अन्य। **6.जयपुर (श्रीनिवास नगर)-** राजस्थान के उपमुख्यमंत्री भ्राता सचिन पायलट को बधाई एवं ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.हेमा बहन तथा ब्र.कु.रमेश भाई। **7.नई दिल्ली-** 'विश्व-शान्ति-सद्भावना' विषयक कार्यक्रम में मंचासीन हैं दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष भ्राता रामनिवास गोयल, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.आशा बहन, ब्र.कु.चक्रधारी बहन, बहाई धर्म के प्रतिनिधि डॉ.भ्राता ए.के.मर्चेंट तथा अन्य। **8.ओर.आर.सी (गुरुग्राम)-** 18वें वार्षिकोत्सव में केक काटते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.आशा बहन, मेयर बहन मधु आचार्य, ब्र.कु.शुक्ला बहन, ब्र.कु.सरला बहन, ब्र.कु.शारदा बहन तथा अन्य।

संजय की कलम से –

योग द्वारा मन-बुद्धि पर

नियन्त्रण

जब कोई वस्तु अपना धर्म अथवा गुण परिवर्तित कर लेती है तो उसे 'विकृत' कहते हैं। अत: 'विकार' धर्म-परिवर्तन और स्वरूप-परिवर्तन अथवा गुण-परिवर्तन का नाम है। आत्मा को 'विकारी' तब कहा जाता है जब आत्मा स्वरूप-निश्चय को, शान्ति रूपी धर्म को और सम्पूर्ण अहिंसा, सन्तोष, धैर्य इत्यादि दिव्य गुणों को छोड़कर देह-निश्चय, अशान्त और आसुरी लक्षणों वाली हो जाती है।

जैसे शीतल जल अग्नि से मिल कर अपने शीतलता रूपी धर्म को त्याग विधर्मी अर्थात् गर्म हो जाता है, ठीक उसी प्रकार शान्ति स्वरूप आत्मा भी जड़ प्रकृति का संग करती-करती अपने आत्म-निश्चय को और अपनी शान्ति को खोकर विकारी अर्थात् विधर्मी और विपरीत गुणों वाली हो जाती है।

यह एक नियम है कि स्वधर्म ही सबको प्रिय लगता है क्योंकि स्वधर्म में टिकने से ही सुख की प्राप्ति होती है। स्वधर्म कहते ही उन लक्षणों को हैं जिनमें स्थित होने से सच्चे सुख-शान्ति की प्राप्ति होती है। स्वभाव से ही सब मनुष्य-आत्माएँ सुख और शान्ति प्राप्त करना चाहती हैं अर्थात् स्वधर्म में टिकना चाहती हैं। परन्तु यह ज्ञान न होने के कारण कि स्वधर्म में पुन: स्थित कैसे हुआ जा सकता है अर्थात् विकारों को तथा विकर्मों को कैसे समाप्त किया जा सकता है, वे अपनी इस शुभ इच्छा (सुख और शान्ति की कामना) को पूर्ण नहीं कर पातीं।

जब मनुष्य को विषय और व्यक्ति आकर्षित करते हैं तभी वह विकृत होता है। विषय और व्यक्तियों में ले जाने वाला मन के विकल्प के सिवा और कोई नहीं। अत: जब तक मन को व्यक्तियों और विषयों के आकर्षण के प्रभाव से निकाला न जाये तब तक मनुष्य निर्विकारी अथवा स्वधर्म में स्थित नहीं हो सकता।

मन का विषय और व्यक्तियों से निरोध कर सकने वाली अथवा अनासक्त करने वाली तो बुद्धि ही है। बुद्धि ही इस बात का निर्णय करती है कि अमुक कार्य करने के योग्य है या नहीं। परन्तु यदि मनुष्य की बुद्धि अथवा निर्णय-शक्ति के मुकाबले में मनुष्य के अशुद्ध संकल्प, उसकी वासनाएँ अथवा अशुद्ध संस्कार अधिक दृढ़ हों तो बुद्धि मन से हार मान लेती है और मन स्वयं तो विषय-व्यक्तियों का चिन्तन करता ही है परन्तु वह बुद्धि को पूर्ण रीति से परास्त करके इन्द्रियों को भी वासना-भोग में लगा देता है। यदि मन इस प्रकार से विकृत होता रहे तो वह बुद्धि को भी विकृत (विकारी) कर देता है और बुद्धि के नाश होने से अर्थात् कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य की पहचान न रहने से मनुष्य का सर्वनाश हो जाता है। भ्रष्टबुद्धि वाला मनुष्य विकर्म करता है, विकर्मों से दुख होता है और दुखी मनुष्य का जीवन मृत्यु तुल्य ही है।

अमृत-सूची

- काल-चक्र में प्रेम की दास्तान (सम्पादकीय) 4
- मर्यादा रूपी प्रहरी और शब्दों का मायाजाल 6
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के 8
- पत्र सम्पादक के नाम 10
- ऐसी शिवरात्रि अबकी बार 11
- खुल गया बुद्धि का ताला 14
- सजागृह में बजे रूहानी साज 15
- अन्न की बर्बादी अक्षम्य अपराध है 17
- शिव साजन मिला सलोना है (कविता) 18
- जिस्मानी प्रीतम और रूहानी प्रीतम 19
- खुश रहने के लिए महत्वपूर्ण बिन्दु 20
- अब नया सवेरा आयेगा (कविता) 21
- अव्यक्त पालना के 50 वर्ष 22
- गरीब पैदा होना पाप नहीं, गरीब मरना पाप है 25
- जागो मेरी बहना (कविता) 26
- ज्ञानामृत ने जगाई ज्ञान की ज्योति 27
- ईश्वरीय ज्ञान से जीवन में आया परिवर्तन 27
- जिसे ढूँढ़ रही थी, वह मिल गया 28
- मुझे सच्चा रास्ता मिल गया 28
- सचित्र सेवा-समाचार 29
- विरोधी को बनाया सहयोगी 30
- सचित्र सेवा-समाचार 32
- क्रोध का खानदान (कविता) 34

काल-चक्र में प्रेम की दास्तान

प्रेम एक ऐसा दिव्य गुण है जो इस सारे संसार-चक्र अथवा युग-चक्र की धुरी है। सतयुग और त्रेतायुग की मूलभूत विशेषता यह थी कि उस काल में प्रेम पवित्र एवं आध्यात्मिक रूप से व्यवहृत होता था। इन दो युगों के बारे में लाकोक्तियों में यह कहा गया है कि 'तब शेर और गाय एक घाट पर पानी पीते थे' और 'घी तथा दूध की नदियाँ बहती थीं'। ये प्रेम ही के प्रताप की गाथा है क्योंकि प्रेम के बिना एक घर में दो मनुष्य भी इकट्ठे रह कर पानी पीने को तैयार नहीं होते और दूध की नदियों की बजाय वे रक्त की नदियाँ बहाने को उद्यत हो जाते हैं

शुद्ध प्रेम है तो संसार स्वर्ग है

उस प्रथम कल्पार्द्ध में राजा द्वारा प्रजा का शोषण न होना और प्रजा में भी आर्थिक संघर्ष का अव्याप्त होना भी इसी प्रेम के ही सुफल हैं। तब दिव्य प्रेम के कारण ही एकता थी और राज्य की अखण्डता थी। प्रेम के प्रभाव से ही सभी लोग एक परिवार के सदस्यों की न्यायीं रहते थे। अतः उस काल में तराजू या गज-मीटर के द्वारा तोल-माप की खींचातानी की आवश्यकता नहीं थी, न ही वस्तुओं के मूल्य चुकाये जाते थे। जब हीरे-मोती ही भवनों की दीवारों में लगे रहते थे और उन्हें देखकर सभी खुश थे और किसी के मन में ईर्ष्या या स्तेय का भाव नहीं था, तब अन्य वस्तुओं की दलाली, परचून क्रय-विक्रय और टैक्स या 'कर' की क्या बात हो सकती थी? तब तो विस्तृत एवं व्यापक प्रेम के कारण उदारता ही का व्यवहार और व्यापार था जिसमें देने की भावना अधिक और लेने की इच्छा कम थी। तब मुद्रा का प्रयोग कम और उपहार का प्रचलन अधिक था। तब न तो बनियों के जैसी व्यापार-पद्धति थी और न कामरेडों की तरह बँटवारे एवं वितरण की कश्मकश थी बल्कि नजराने, भेंट, सौगात, उपहार आदि के रूप में वस्तुओं को देने-लेने की प्रथा अधिक थी। तब जो सर्व गुणों की तथा मर्यादाओं की विद्यमानता थी उसका बीज भी पारस्परिक प्रेम ही में छिपा था क्योंकि जहाँ शुद्ध प्रेम है वहाँ सन्तुष्टता, मधुरता, सरलता और हर्षितमुखता आदि स्वतः ही होंगे। जब प्रेम होगा तो कोई कटु व्यवहार क्यों करेगा, असन्तुष्ट कैसे होगा और निन्दा क्यों करेगा? अतः प्रेम शुद्ध हो तो यही संसार स्वर्ग है और प्रकृति भी प्रेम के प्रभाव से पूर्णतः विकसित होकर वैसी ही भूमिका अदा करती है।

प्रेम की विकृति

द्वापरयुग और कलियुग में प्रेम विकृत होकर काम, लोभ, मोह, आसक्ति और स्वार्थ का रूप धारण कर लेता है। वह संकीर्ण हो जाता है और परिवार, वंश, देश और जाति आदि की सीमाओं में बंध जाता है। इस प्रकार प्रेम के बँटवारे से राज्य, सम्पत्ति और वफादारी का भी

बँटवारा हो जाता है और यह झगड़ों की जड़ बन जाता है। तब विकृत प्रेम के विकट परिणाम से पीड़ित होकर किसी का प्रेम भक्ति में, किसी का पूजा में, किसी का माला-सिमरण में, किसी का प्रभु में और किसी का शास्त्र में सहारा ढूँढ़ता है। इस प्रकार, भक्ति मार्ग भी प्रेम ही की किसी-न-किसी प्रकार की भूमिका लिये हुए है। कोई पति रूप में प्रेम में प्रभु को पाना चाहता है तो कोई स्वामी-सेवक के प्रेम-परिवेश में। तुलसीदास की तरह कोई पत्नी से प्रेम के प्रस्ताव के ठुकराये जाने पर राम से प्रेम करने लगता है तो कोई सूरदास की तरह प्रेम की विकृति से पीड़ित होकर अपनी आँखों में सुआ-सलाई मार कर 'बाल-गोपाल' से प्रेम करने लगता है। कोई स्वयं को गिरधर के लिए मीरा की तरह 'री मैं तो प्रेम दीवानी, मेरा दर्द न जाने कोय' के स्वरालाप में मस्त हो उठता है, तो कोई जायसी की तरह उसे प्रेमिका के रूप में पाए जाने पर काव्य रच डालता है।

प्रेम ही परिवर्तन का मूल तथा प्रगतिकारक

फिर, संगमयुग में परमपिता परमात्मा आकर आत्माओं को 'प्यारे बच्चे', 'सिकीलधे बच्चे', 'नूरे चश्म' आदि प्रेम-सूचक शब्दों से सम्बोधित करते हैं और आत्माएँ भी उन्हें 'परमप्रिय' कहकर उनसे सर्व सम्बन्धों का प्रेम जोड़ती हैं। आत्माएँ ईश्वरीय ज्ञान इसीलिए प्राप्त करती हैं ताकि उन्हें पता चले कि प्रेम देह या प्रकृति के पदार्थों से न करके परमपुरुष परमात्मा से करना है जिसका अमुक परिचय है। फिर इसी प्रेम से प्लावित होकर अपने प्रियतम की स्मृति में मन को लीन कर देना ही योग है। प्रेम के बिना योग (चाहे उसमें प्राणायाम या आसन न हो) तो हठ-क्रिया ही है। अपने प्रियतम प्रभु के प्रेम में सब-कुछ न्योछावर करना ही त्याग है, उसके प्रेम में अनन्य-भाव ही ब्रह्मचर्य है, उस प्रेमी को प्रसन्न करने के लिए चाँद और तारे भी तोड़ कर लाने को तैयार होना ही उसकी आज्ञाओं का सहर्ष पालन करना है। इसी प्रकार, ईश्वर-प्रेम दिव्य गुणों के विकास की भी सही चाबी है। पुनश्च, जिससे प्रेम हो उसके अनुसार सेवा तो की ही जाती है। प्रभु-प्रेम के कारण ही संगमयुग के जीवन में समूचा मनोपरिवर्तन होता है। जिसमें शिव बाबा के लिए जितना प्रेम है, उतना ही वह लग्न में मग्न है, उतना ही वह वफादार और फरमानबरदार भी है। प्रभु-प्रेम वाले को ही नशा रहता है और वही नष्टोमोहः भी होता है। जिसका प्रकृति से प्रेम है, वह भोगी है और जिसका प्रभु से प्रेम है, वही योगी है।

प्रेम ही मनुष्य को निद्राजीत बनाता है और प्रेम ही मैं और मेरे के भाव को मिटाता है। अतः प्रेम के बिना योग का रसास्वादन करने की इच्छा करना, रेत में से घी प्राप्त करने की व्यर्थ कामना करना है।

सारे पुरुषार्थ का पारखी है प्रेम

इस प्रकार, सारे पुरुषार्थ का पारखी प्रेम ही है। प्रभु-प्रेम करने वाली आत्मा पर से ही माया का जंक उतरता है और जो ईश्वर रूपी शमा पर परवानों की तरह फिदा होता है वही प्रभु का प्रेम-पात्र होता है। प्रभु के प्रेम की भी सात भूमिकाएँ हैं जिनका स्थान-अभाव के कारण हम वर्णन नहीं कर रहे हैं परन्तु यह निश्चित है कि जिसका शिव बाबा से प्रेम है, उसे तो उसकी याद सदा आयेगी ही। प्रेम के बिना तो निरन्तर योगी बनना असम्भव ही है। जिसे परमपिता से प्रेम है, वह उन पर तन-मन-धन से कुर्बान भी जायेगा क्योंकि प्रेमी तो अपने प्रेम-पात्र के लिए सबकुछ लुटा देता है। उसे न लोक-लाज रहती है, न वह सितम सहन करने से घबराता है। प्रेम ही मनुष्य को निद्राजीत बनाता है और प्रेम ही मैं और मेरे के भाव को मिटाता है। अतः प्रेम के बिना योग का रसास्वादन करने की इच्छा करना, रेत में से घी प्राप्त करने की व्यर्थ कामना करना है।

संक्षेप में कहें तो पाँचों युगों की कहानी पर विचार करने से यही मालूम होता है कि वास्तव में यह सारा विश्व-नाटक ही एक लम्बी प्रेम-कहानी है। जो प्रभु से प्यार करता है, वह देवता बनता है, स्वर्ग का सुख पाता है और जो प्रभु-प्यार की अवहेलना कर प्रकृति के पाश को प्रेम मानता है, वह असुर बन नरकगामी होता है। इस रहस्य को जानना ही सच्चे प्रेम का पथिक बनना है। ■■■

मर्यादा रूपी प्रहरी और शब्दों का मायाजाल

■■■ ब्रह्माकुमार विपिन गुप्ता, टीकमगढ़ (म.प्र.)

मर्यादाएं मनुष्य आत्माओं को सुरक्षित रखने वाली प्रहरी हैं। ये दिखाई नहीं देती पर हमेशा विपदाओं और दु:खों से सुरक्षित रखने में सक्षम होती हैं। कोई भी सड़क मीलों लंबी हो सकती है लेकिन उसके एक किनारे से दूसरे किनारे तक की चौड़ाई कुछ मीटर ही होती है, ये किनारे ही मर्यादायें हैं जो संदेश देते हैं कि हे यात्री, तुम हमारे मध्य ही रहो, हम निरंतर तुम्हारे संग रहेंगे। हमारे मध्य रहने से तुम कहाँ से कहाँ पहुंच जाओगे। परन्तु यदि तुम हमें ही पार कर लेते हो तो उसका परिणाम सिर्फ असीमित भटकाव ही निकलेगा। अंतत: हमारे मध्य फिर से तुम्हें आना ही होगा।

मर्यादाओं में रहने से सफलता निश्चित हो जाती है

यहाँ जानने योग्य बात यह है कि ये किनारे या मर्यादायें कोई अवरोध नहीं हैं, मार्ग तो खुला हुआ है लेकिन ये हमें मंजिल की दिशा में चलाए रखते हैं। ये यात्रा का बंधन नहीं अपितु यात्रा की दिशा का प्रबंधन हैं। प्रबंधन, कार्य को सुनियोजित रीति से पूर्ण करने के लिये किया जाता है, न कि कार्य को अवरुद्ध करने के लिये। जैसे जलधारा किनारों के बीच में बहे तो धार कहलाती है और किनारे तोड़े तो बाढ़ कहलाती है, उसी प्रकार, जीवन-यात्रा मर्यादाओं को पार करे तो विकृति कहलाती है। गाड़ी में ब्रेक का होना, गाड़ी को अधिकतम गति से चलाने की स्वतंत्रता देता है। इससे जब चाहें उसे रोक भी सकते हैं अन्यथा बिना ब्रेक की गाड़ी को तेज चलाने का साहस ही नहीं किया जा सकता। मर्यादाओं के भीतर रहकर चलना भी हमारी निश्चित सफलता तय कर देता है। मर्यादायें सीमाओं में बांधती हैं परन्तु पूर्ण स्वतंत्रता से विधिपूर्वक पुरुषार्थ करने का अधिकार भी देती हैं कि आप इस रास्ते पर निश्चिंत होकर चलो, आप सही गंतव्य पर ही पहुँचोगे। यदि इस अधिकार में कोई बाधा डाले व रोके तो उस बाधा को हटाना व पार करना सभी का अधिकार है लेकिन दुर्भाग्यवश मनुष्य किनारों को पार करना ही अपनी स्वतंत्रता का अधिकार मान लेता है और ऐसा वह करता है किसी क्षणिक आसक्ति व प्रलोभन के लिये।

सुविधावादी प्रवृत्ति से मर्यादाओं की मनचाही परिभाषा

साधारण मनुष्यों में एक प्रवृत्ति देखी जाती है कि वे अक्सर बहुत अच्छी-अच्छी बातें करते हैं परन्तु उन्हें कर्म में उतारने से पीछे हट जाते हैं। इसका कारण जांचने पर पता चलता है कि साधारण मनुष्य जीवन में न तो बहुत ज्यादा अच्छाई चाहता है और न ही बहुत ज्यादा बुराई चाहता है। वह अगर कुछ चाहता है तो वो है 'सुविधा'। इसलिये ऐसे मनुष्य आवश्यकतानुसार महात्माओं के आगे भी सर झुका लेते हैं और जरूरत पड़ने पर भ्रष्टाचारी व स्वार्थी लोगों की खुशामद भी कर लेते हैं। अपनी इसी सुविधावादी प्रवृत्ति के कारण ये लोग मर्यादाओं की मनचाही परिभाषा रचते रहते हैं और उनके साधन होते हैं बहानेबाजी या शब्दों के बदले हुये अर्थपूर्ण तर्क। एक मनोरंजक किस्से के अनुसार, एक कंजूस सेठ को उसके मित्र एक प्रवचन सुनने के लिये जबरदस्ती ले गए। लौटकर आने पर उसके साथियों ने उससे प्रवचन के बारे में पूछा तो उसने खुश होकर कहा कि वाह, आज तो मैं ऐसा प्रवचन सुनकर धन्य हो गया, आज मैंने जाना कि दान की महिमा कितनी अपरम्पार है। साथियों ने पूछा, अब तुम क्या करोगे? सेठ ने फौरन कहा कि मैं आज से

ही दान लेना आरंभ कर देता हूँ।

ज्ञान है दोधारी तलवार

इससे समझा जा सकता है कि शब्दों का मतलब कितनी आसानी से बदला जा सकता है। शब्द वास्तव में बहुत असहाय होते हैं, उनके केवल अर्थ होते हैं। भावार्थ या अभिप्राय कहने व सुनने वालों के होते हैं जिनका प्रभाव ज्यादा पड़ता है। अपनी रुचि व सहूलियत के लिये शब्दों से खेलने के कारण मर्यादाओं को पार करने के कई कार्य आए दिन होते रहते हैं।

इन गतिविधियों से ईश्वरीय ज्ञान मार्ग पर चलने वाली आत्मायें भी अछूती नहीं हैं। ज्ञान की अधिकता के कारण वे बातों के मतलब बदलने या मनचाहे ढंग से उनका प्रयोग करने में होशियार हो जाती हैं। वे नहीं समझ पातीं कि ज्ञान दोधारी तलवार है, जिसकी धार का एक सिरा स्वयं की ओर ही होता है जो खुद को भी घायल कर सकता है। ज्ञान का मतलब बदलकर, असत्य निष्कर्ष को स्वीकार कर लेना ही स्वयं को घायल करना है। संसारी कोर्ट में भी सच की ओर से केस लड़ने वालों और झूठ की ओर से केस लड़ने वालों के लिये कानून की किताबें अलग-अलग नहीं होतीं लेकिन उन्हीं किताबों की बातों के मतलब बदल कर कई बार झूठे केस जीत लिये जाते हैं। सांसारिक न्यायाधीश सबकुछ जानते हुए भी अपने दायरों में बंधा हुआ होता है या उसके परखने में भी भूल हो सकती है परन्तु पारलौकिक न्यायाधीश तो किन्हीं हद के दायरों में नहीं बंधा है और न ही उसके परखने में कोई भूल हो सकती है।

ईश्वरीय ज्ञान को जीवन में धारण करने वाली आत्माएँ भी इस सर्वश्रेष्ठ प्रहरी (मर्यादा) की सुरक्षा से कैसे बाहर हो जाती हैं, इसके बहुत सारे उदाहरण हो सकते हैं परन्तु उनमें से एक है ईश्वरीय परिवार के भाई-बहनों अथवा कुमार-कुमारियों के बीच ज्ञान की चिटचैट। ज्ञान का मंथन आंतरिक संतुष्टता देता है परन्तु उसी ज्ञान में अपने को अद्वितीय समझने का भ्रामक नशा, प्रदर्शन का शौक पैदा करता है। तब उस प्रदर्शन व वर्णन के दर्शकों व श्रोताओं की खोज शुरू होती है। दूसरी स्थिति में, ज्ञान के सुखद अनुभवों के अभाव में स्वयं में खालीपन का अनुभव होता है तब भी वह आत्मा वाक् विद्या द्वारा मजेदार बातों से अपने खालीपन को भरना चाहती है। जिसके लिये बाबा कहते हैं, ''बातों के पकौड़े बनाना।'' तीसरी स्थिति में, अनुशासित व संयमित जीवन शैली मुश्किल प्रतीत होने के कारण आत्माएँ साधारण मन-बहलाव की बातों की ओर खिंचती हैं।

ऐसे वाक्रस, वाहवाही, प्रदर्शन व हंसी-मजाक के आकर्षण में अक्सर कुमार व कुमारियाँ, ज्ञान वार्तालाप के बहाने समय गंवाने की आदत डाल लेते हैं। यदि उन्हें सचेत किया जाए तो उनके पास तर्क है कि इसमें बुराई क्या है। परन्तु विचार करने की बात है कि यही बातचीत कभी किन्हीं बुजुर्ग अनुभवी माताओं से भी हो सकती है, किन्हीं वरिष्ठ भ्राताओं व निमित्त आत्माओं से भी हो सकती है। साधारण किन्तु ज्ञान के सच्चे जिज्ञासुओं को ज्ञान समझाने की सेवा में भी ज्ञान का प्रयोग किया जा सकता है। यदि सबके साथ समान रूप से संवाद है तो ठीक है पर यदि समानता नहीं दिखाई देती तो यह सूक्ष्म लगाव नहीं तो क्या है? फिर ये कमजोरियाँ क्या श्रेष्ठ साधना में मन लगने देंगी? ऐसी आत्माएँ सिर्फ बातों व तर्कों के मायाजाल से अपनी कमजोरियों की वकालत करते रहते हैं और स्वयं को समझाने के मार्ग भी बंद कर देते हैं। तर्कों से अपने को सही सिद्ध तो किया जा सकता है पर संस्कारों को शुद्ध नहीं किया जा सकता, न ही आदर्श पवित्र योगी कुमार-कुमारी जीवन का उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है।

तो अब कुतर्कों के मायाजाल, शब्दों के बनावटी जंजाल से बाहर निकल कर, अंतर्मुखता की शांति में विवेक की आवाज सुनिए तब स्वधर्म व स्वलक्ष्य का मार्ग और मर्यादायें स्पष्ट दिखाई देंगी और जीवन-यात्रा दिशाबद्ध हो जायेगी एवं वास्तविक खुशी मिल जाएगी।

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

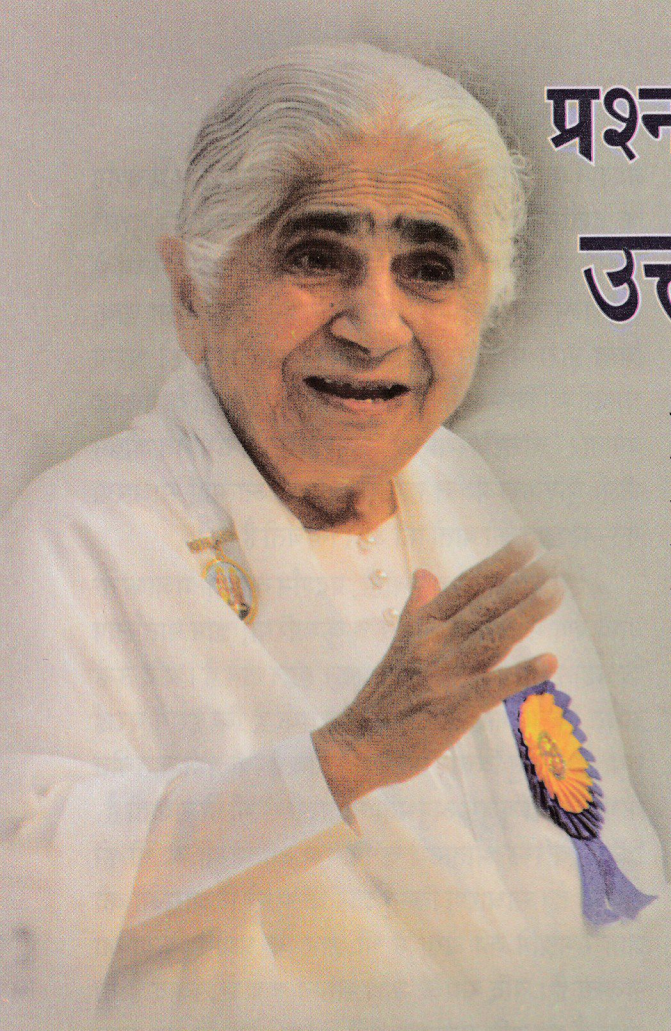

प्रश्न- मुरली पढ़ना और क्लासिज सुनना क्यों जरूरी है?

उत्तर- मन के प्रश्न का जब तक ठीक से उत्तर नहीं मिलता है ना, तो वो आगे नहीं बढ़ सकता है और पीछे की बातों को भूल नहीं सकता है इसलिए हर बात को अच्छी तरह से स्पष्ट रीति से समझना जरूरी होता है। इसके लिये सारी मुरली और क्लासेज सुनने होंगे और बाकी सब बातों में लगाओ बिन्दी, तभी एक बाप दूसरा न कोई का पाठ पक्का हो सकता है। सारी मुरलियां हमने डायरेक्ट सुनी हैं, मुरली में खुदाई जादू है। जब आत्मा का ज्ञान मिला तब से भले मैं शरीर में हूँ, पर ऐसे लगता है, आत्मा फ्री हो गयी है और परमात्मा शक्ति दे रहा है। सभी उस प्रभु लीला का अनुभव कर रहे हो। तो आत्मा का परमात्मा से मिलन होने से स्व सहित सबको बहुत फायदा हो रहा है ना। कुछ भी बात हुई या हो रही है तो लगाओ बिन्दी। कोई भी परिस्थिति आये लेकिन दृढ़ता के कारण सब एक्यूरेट है, ऐसे लगता है। सिर्फ कभी भी देह-अभिमान वश न हो जाओ। तो ऐसे लगेगा, एक बाबा करावनहार है, मैं कुछ नहीं करती हूँ, करावनहार करा रहा है। शरीर में हूँ, कभी कहीं दर्द होता है तो मैं कहती हूँ, बाबा खींच लो ऊपर। तो बाबा कहता है, नहीं बच्ची, मैं तुमको ठीक कर देता हूँ। जो कुछ हुआ, क्यों हुआ या क्या होगा, यह नहीं सोचो। भगवान मेरा साथी है। ड्रामा की नॉलेज को बुद्धि में रख साक्षी होकर के अपना पार्ट प्ले करने की ट्रेनिंग, पालना बाबा ने अच्छी दी है।

प्रश्न- अतीन्द्रिय सुख किसे कहा जाता है?

उत्तर- कहीं पर भी कोई मेरा नाम नहीं लो, पर अपनी उन्नति के लिये बहुत ख्याल करना है क्योंकि इस ज्ञान मार्ग में न सिर्फ चलना है पर उड़ते जाना है। बस, चलते-चलते कहाँ भी रुकना नहीं है। यह जीवन यात्रा है, घर जाना है। फिर सतयुग में आना है। घर जाकर वहाँ ही बैठ नहीं जाना है, यह प्लैन है। तन भी सफल हो गया, मन भी सफल हो गया, धन तो बाबा के यज्ञ में सफल हो ही रहा है। बाबा ने कहा, पहले मन को मेरे में लगा दो। धीरज है तो सुख के दिन आयेंगे, इसके लिए दु:ख न दो, न लो। ईश्वरीय सुख जो है वो लो। इन्द्रियों पर जीत पाने का जो सुख है, उसे अतीन्द्रिय सुख कहा जाता है। कोई भी कर्मेन्द्रिय कहाँ पर भी आकर्षित न हो जाए। कुछ चाहिए लेकिन क्या करेंगे, कहाँ रखेंगे? जिस समय जो चाहिए वह सब आपेही आ जाता है, यह वन्डर है इसलिए हमको कभी कहीं कुछ सोचना नहीं पड़ता है, मांगना नहीं पड़ता है। तो यह क्या है? प्रभु लीला। आप सब भी साक्षी होकर

के देखते हुए अपना पार्ट बजा रहे हो ना। प्रभु की लीला को देख, अपने भाग्य को देख आप भी खुश हो रहे हो ना।

प्रश्न- बाप समान दु:खहर्ता और सुखकर्ता बनना है तो क्या करें?

उत्तर- इस ड्रामा के अन्दर भगवान ने जो पार्ट दिया है, वो अच्छा बजाने के लिये यह संगठन प्रेरणा देता है। आज दिल व जान से, सिक व प्रेम से यह बात स्वीकार करो। जो करना हो वो अब कर लो, कल किसने देखा है, यह एक बात बहुत जरूरी है। समय हमारे लिये रुकेगा नहीं, पर हम कहाँ रुकें नहीं। हम सभी एक बाबा के बच्चे हैं, ईश्वरीय परिवार के हैं। तो मेरी यह भावना है कि कोई भी झरमुई, झगमुई में अपना समय नष्ट न करें। हर एक समय का कदर करो। जिसने स्वयं को पहचाना, उसने समय को पहचाना। यह जो समय है, दु:खहर्ता और सुखकर्ता बनने का है। दृष्टि से ही बाबा सृष्टि को बदल रहा है। तो अपने चिंतन को शुद्ध बनाओ, कोई भी बात की चिंता नहीं करो। सब अच्छा होना है। हुआ ही पड़ा है क्योंकि कराने वाला करा रहा है, हमको सिर्फ प्रेरणामूर्त बनके रहना है। इस बाबा को हमने पहले से ही आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार देखा था। शिवबाबा ने, ब्रह्मा मुख से वचन सुनाये, मुख में ब्रह्माभोजन खिलाया क्योंकि बाबा बेहद का बाबा है ना। बाबा देखता है, बच्ची व्यर्थ समय नहीं गँवाती है, तो बाबा की फिर प्यार भरी शक्ति मिलती है। तो यह समय बहुत अच्छा है। हम अपने आपको जानने, पहचानने और बाबा का बन करके रहने में एवररेडी रहें।

प्रश्न- विकर्माजीत, कर्मातीत स्थिति का अनुभव करना है तो क्या करें?

उत्तर- मैं सिर्फ राय नहीं देती हूँ परन्तु दिल से कहती हूँ कि हरेक विकर्माजीत, कर्मातीत बनो तो बहुत अच्छा होगा। सफेद कपड़ा, हाथ खाली और चले वतन की ओर। बहुत अच्छा है मेरा बाबा, मैं क्या करूँ! क्या दूँ बाबा को! मैंने तो बाबा को दिल दे दी है। बाबा भी मेरा बेबी है, ऐसे बेबी समझकर एक बार मैंने बाबा को सम्भाला था। बेबी को पालने का अनुभव किया था। बाबा कितनी भागदौड़ करता है, कितने काम करता है। कैसे करावनहार होके सब कुछ करता-कराता है। यह भी प्रभु की लीला है ना। इसे कभी साक्षी हो अच्छी रीति देखना चाहिए। कहते भी हैं, अहो प्रभु, तेरी लीला। ईश्वर मुझे जानता है, कभी भी मेरा दिल उदास नहीं होता है। मैं कहूँ, यह मुझे जानते नहीं हैं, मेरे ऊपर नाराज़ होते हैं, यह भी मैंने कभी कहा नहीं है, न कहेंगी, जरूरत नहीं है। सभी हमको जानते हैं, मैं सबको जानती हूँ।

विकर्माजीत, कर्मातीत बनने के लिये सर्वगुण सम्पन्न बनना है। सर्वगुण सम्पन्न मुझे बनना है तो ऑटोमेटिक गुणों का भण्डारा भरपूर। कोई में, कोई अवगुण न रहे, न देखें, न सुनें, न सुनायें। हमारी पढ़ाई है ही सर्वगुण सम्पन्न बनने की। अभी टाइम है, फिर टाइम गया कि गया इसलिए इस थोड़े से समय में सबके गुण ही देखते रहो।

प्रश्न- बाबा से सम्बन्ध ठीक नहीं है तो क्या याद आता रहेगा?

उत्तर- जब से बाबा के बने हैं तब से सर्व सम्बन्ध एक बाबा के साथ हैं, तो सर्व सम्बन्ध से बाबा की याद नेचुरल आती है, उनकी श्रीमत पर चलना इज़ी लगता है, राजयोग सहज हो जाता है। न्यारा बनके बाबा से प्यार खींचो, युक्ति है यह, इससे ऑटोमेटिक सेकेण्ड में देह से न्यारे बन जाते हैं। ज्ञान में आने के बाद भी अगर लौकिक सम्बन्ध में मिली हुई ठेस (दु:ख वा धोखा) याद आवे माना बाबा से सम्बन्ध नहीं है। कोई भी धर्म वाले परमात्मा को फादर कहेंगे और हम कहते हैं, वह हमारा माता, पिता, टीचर, सखा, सतगुरु है। बाबा की याद में यज्ञ-सेवा बहुत अच्छी लगती है। मुख्य बात है, समय को सफल करो, समय व्यर्थ नहीं गंवाओ। व्यर्थ संकल्प में, व्यर्थ वाणी में, व्यर्थ कर्म में समय न जाये।

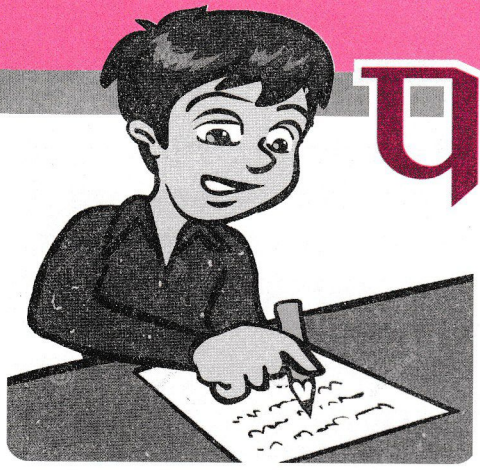

पत्र सम्पादक के नाम

नवम्बर, 2018 का सम्पादकीय 'दिव्य गुणों की धारणा' पढ़कर ईश्वरीय गुण, सद्गुण और मानवीय गुणों की परस्पर किस तरह की उच्चकोटि की मैत्री है, यह स्पष्ट हुआ।

'क, ख, ग, घ का अर्थ' लेख द्वारा इनका अर्थ जान कर लगा कि मन को शान्त करने में पाठकों को मदद मिलेगी और लेखिका बहन को ढेर दुआएँ।

'मेरे साथ क्या हो रहा है' इसे छोड़ 'मुझे क्या करना है' इस पर ध्यान दो – लेख पढ़कर परिवर्तन की दिशा का निर्धारण करना स्पष्ट हुआ। गहन चिन्तन-मनन में डूबकर लिखा गया यह लेख कइयों को चिन्तामुक्त कर पायेगा, ऐसी उम्मीद है।

'दूसरों के लिए कुछ करने का सपना' लेख हीन-बोध से ग्रसित आत्माओं को रोशनी की झलक दे सकता है। आत्मसम्मान और आत्मविश्वास बढ़ाने का रास्ता दिखाता है। सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद।

-- शम्भूप्रसाद शर्मा, सोडाला, जयपुर

'क, ख, ग, घ का अर्थ' लेख बड़ा ही हृदयस्पर्शी है। लेख में वर्णित चौथे पहलू से बच्चों को अवगत करा दें तो हर बालक महान बनेगा। लेखिका ने बड़ी ही संजीदगी से इस लेख को संवारा है। हर बालमन कहानियों के द्वारा सहज ज्ञान का बोध करता है। इसमें प्रत्येक अक्षर के साथ जो मार्मिक व प्रेरणादायक कहानियाँ दी गई हैं वे लेख की उपयोगिता को बढ़ाती हैं। मेरा विश्वास है कि ज्ञानामृत की उपयोगिता इसके नाम के अनुरूप है। इसके लेख के एक-एक पन्ने पर अमृत की बूँदें मानव मन को झंकृत करती हैं।

क, ख, ग, घ के शीर्षक को पढ़कर कोई भी इसके अन्दर छिपे रहस्य को समझ नहीं सकता है लेकिन यह लेख प्रत्येक माता-पिता व शिक्षकों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसे पढ़ें व स्कूलों में बच्चों को इस प्रकार की अलौकिक, बोधगम्य कथाओं को आत्मसात कराने हेतु सहयोग प्रदान करें। इस प्रकार विचार सागर मंथन कर प्रेरणादायक लेख लिखने हेतु लेखिका को हार्दिक धन्यवाद। आशा है कि आप इसी प्रकार समसामयिक लेखों द्वारा बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय की भावना द्वारा जनमानस का मार्गदर्शन करती रहेंगी।

-- ब्र.कु.निर्मला बहन, शान्तिधाम, रीवा (म.प्र.)

नवम्बर, 2018 का अंक काफी सराहनीय रहा। संजय की कलम से 'कमल समान पवित्र जीवन' लेख बहुत अच्छा है। 'परमात्मा का अद्भुत चमत्कार' प्रेरणादायक लेख है। 'आपसी सम्बन्धों में समरसता' लेख सादगी का सन्देश लिए हुए है। इनके साथ-साथ अन्य सभी लेखों के लिए भी लेखकों का धन्यवाद व आभार। ये लेख भी जीवन में आगे बढ़ने में मदद कर रहे हैं।

-- गुलशन कुमार, सेक्टर-7, फरीदाबाद (हरियाणा)

मई, 2018 का सम्पादकीय 'कर्म छिपाया न छिपे' तथा लेख 'मधुबन महायज्ञ मन-इच्छित फल देने वाला है', जून-जुलाई, 2018 के लेख 'वर्तमान में जीयें' तथा 'मन का पुनरावलोकन', अक्टूबर, 2018 के लेख 'माँसाहार करना और कराना दोनों ही महापाप हैं', 'डिप्रेशन क्या है' और 'भूल में छिपा भला', नवम्बर, 2018 का सम्पादकीय, 'दिव्य गुणों की धारणा' – ये सभी लेख पाठकों को आगे बढ़ाने वाले, हिम्मत देने वाले, शिक्षाप्रद और शान्ति देने वाले हैं इसलिये सभी लेखकों को बहुत-बहुत धन्यवाद, साधुवाद।

-- ब्र.कु.ज्ञानेश्वर भाई, शाहपुर (म.प्र.)

अक्तूबर, 2018 अंक में ''ईश्वर बड़ा या कैमरा'' यह छोटा-सा शिक्षाप्रद आलेख दिल को छू गया। इसने जीवन की सच्चाई और परमात्मा के अनुभव को एक ही वाक्य में व्यक्त कर दिया। इंसान द्वारा रचित कैमरे से इंसान घबराता है। उसे पकड़े जाने और दंड भुगतने का भय रहता है परन्तु ईश्वर की नजर 24×7 हमारे ऊपर है। ईश्वर रूपी कैमरे से हम बुरे कर्म और गलतियाँ छिपा नहीं सकते।

-- ब्र.कु.सरोजा, पुणे (महाराष्ट्र)

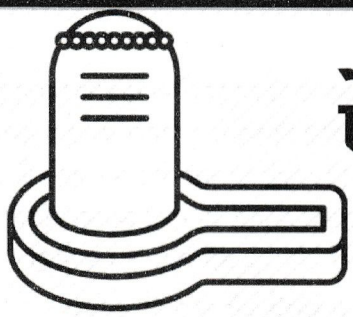

ऐसी शिवरात्रि अबकी बार

■■■ ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

एक बार एक शहर में दस और बारह साल के दो बच्चे, मेरे द्वारा प्रसाद वितरण करते समय पंक्ति में थे। जैसे ही वे एकदम सामने आए, उन्होंने जेब में हाथ डाला, बड़ा-सा जेन्ट्स पर्स बाहर निकाला और दोनों ने 50-50 रुपये मेरे सामने रखी थाली में रख दिए। फिर कह उठे, दीदी जी, भगवान शिव को धन अर्पित किए बिना हम कभी भी उनका प्रसाद नहीं लेते हैं। यह देख मेरे मन में विचार आया (विचार तो सेकेण्ड में आ जाता है) कि इन नाबालिग बच्चों के पास इतना बड़ा पर्स! और धन दान करने का इतना उत्साह! ये तो विद्यार्थी हैं, इनके पास पैसे कहाँ से आए? पंक्ति में बच्चों से आगे वाले और पीछे वाले लोग मीठा-मीठा मुस्करा रहे थे। मुझे गम्भीर देखकर एक भाई ने मेरे कान के पास आकर धीरे से कहा, बहन जी, ये नकली नोट हैं। यह सुनकर मुझे हँसी आ गई। बाकी सब तो हँस ही रहे थे। इस प्रकार, बच्चों की इस नादानी ने पूरे सभागार के माहौल को हँसी-खुशी और ठहाकों में तब्दील कर दिया।

बच्चे तो प्रसाद लेकर चले गए पर मेरे मन में विचार उठा कि दान देना महत्वपूर्ण है परन्तु उससे भी ज्यादा महत्त्व रखता है देने का संस्कार बनना। दान की वस्तु छोटी हो या बड़ी, असली हो या नकली परन्तु देने वाले में दाता-पन के संस्कार पैदा करती है। आज इन बच्चों ने नकली चढ़ावा चढ़ाकर, अपने में भगवान शिव पर कुछ अर्पित करने का संस्कार बनाया। यही संस्कार आने वाले समय में इनसे असली चढ़ावा भी चढ़वाएगा।

असली छोड़, नकली चढ़ाने की नादानी

अब शिवरात्रि आ रही है। भगवान शिव के हम सब भगत, उनके मन्दिरों में जाएंगे और हर साल की भाँति बेर, अक, धतूरा, भांग, कच्चा दूध मिला पानी आदि-आदि उनको अर्पित करेंगे। सोचने की बात यह है कि भगवान शिव इन चीजों का क्या करेंगे? उनके ये किस काम आएंगी? कहीं हम भी उन बच्चों की तरह नादानी तो नहीं कर रहे? असली चढ़ावे को छोड़कर कहीं नकली चीजें तो नहीं चढ़ा रहे? जैसे नकली चीज केवल खेल-पाल के लिए, मन बहलाने के लिए, हँसने-हँसाने के लिए हो सकती है पर उससे असली मकसद पूरा नहीं हो सकता। जैसे नकली नाटों से हम सामान नहीं खरीद सकते, नकली फलों से हम पेट नहीं भर सकते, नकली बस में बैठकर हम दूसरे शहर नहीं जा सकते, नकली बच्चों (गुड़ियों) से अपनी ममता को तृप्त नहीं कर सकते, इसी प्रकार नकली या बनावटी चढ़ावे से असली फल (परिणाम) भी प्राप्त नहीं कर सकते।

काल-कंटक बढ़ोतरी पर क्यों?

भगवान शिव से हम कहते हैं, भर दो झोली, बिगड़ी बना दो। फिर कहते हैं, शिव के भण्डारे भरपूर, काल-कंटक सब दूर। परन्तु यह महिमा हमारे गायन तक ही रह गई, असल में तो इतनी शिवरात्रियाँ मनाते भी हमारे तन, मन की झोली खाली (शक्तिहीन, बीमार, तनावग्रस्त, अवसादग्रस्त, चिन्तित, नकारात्मक) है। हमें लगता है कि किस्मत हमारी बिगड़ी हुई है और काल-कंटक बढ़ोतरी पर हैं तथा भण्डारे भरने के बजाए खाली होते जा रहे हैं, ऐसा क्यों?

कहीं ऐसा तो नहीं कि जैसे नकली चीज, मात्र देखने भर का सुख देती है, असली नहीं; उसी प्रकार, यह महिमा भी मात्र गाने, गुनगुनाने और स्मरण करने भर का सुख देती है, असली नहीं; हमारे जीवन व्यवहार में यह उतरती ही नहीं?

और फिर नकली चीज में मानव का श्रम और धन भी तो नहीं लगता। किसी को असली गाय दान में देनी हो तो मानसिक ऊर्जा, धन, श्रम कितना खर्च होगा! और

यदि मिट्टी की गाय दान करें तो कितना खर्च होगा, यह हम सभी भली-भाँति जानते हैं। असली गाय दान करने के बदले में क्या मिलेगा और मिट्टी वाली के बदले क्या मिलेगा, यह भी हम अच्छी तरह से जानते हैं।

बेर चढ़ाएँ पर वैर भी अवश्य चढ़ाएँ

तो आइये देखें, भगवान शिव हमसे क्या चाहते हैं? भगवान की महिमा में गाया जाता है, वे निर्भय और निर्वैर हैं। वे अपने बच्चों को भी अपने समान ही देखना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि मेरा हर भक्त, हर बच्चा अपने मन का भय और वैर मुझे अर्पण करे। मन में भय भी तब आता है जब किसी से वैर-विरोध हो। इस वैर-शत्रुता के चलते हम कई मनुष्यों से दूरी बना लेते हैं और परिणामस्वरूप उनसे होने वाले फायदों से भी वंचित हो जाते हैं। हम मन में गाँठ तो लगा लेते हैं पर उसे खोलते नहीं हैं। जैसे शरीर में गाँठ कभी-कभी भयानक कैन्सर का रूप धारण कर लेती है ऐसे ही मन की गाँठ रिश्तों का कैन्सर बन जाती है। एक बार एक बहन (मान लो ए) के दो पुत्र थे, दूसरी मान लो बी के दो पुत्रियाँ। ए को घमण्ड रहता था कि मेरे तो पुत्र हैं, इसलिए वह बी को नीचा दिखाने का सूक्ष्म भाव मन में रखती थी। धीरे-धीरे यह सूक्ष्म भाव और इसके साथ जुड़े अन्य नकारात्मक भाव गहरे होते गए और दोनों में बोल-चाल बन्द हो गई। कालान्तर में बी की दोनों पुत्रियाँ पढ़-लिखकर अच्छे पदों पर सेवारत हो गई। ए के दोनों पुत्र पढ़े भी कम और नौकरी के लिए मारे-मारे फिरते रहे। कई लोगों ने ए से कहा, तुम बी को कहो ना, उसकी पुत्रियाँ इतने पड़े पदों पर हैं, तुम्हारे पुत्रों को मदद करें परन्तु वह कहे कैसे? संसार में कभी भी, किसी का भी पासा पलट सकता है इसलिए प्यार, स्नेह, सम्मान बनाए रखना बहुत जरूरी है। विचार कीजिए, इतने वर्षों में कितनी शिवरात्रियाँ आई, ए और बी हर बार शिवलिंग पर बेर तो चढ़ा आई परन्तु मन के वैर, विरोध और शत्रुता को नहीं चढ़ाया। बेर चढ़ाकर अल्पकालिक खुशी तो मिली पर यदि वैर चढ़ जाता तो सदाकाल की खुशी मिलती।

इसी प्रकार भगवान शिव कहते हैं, आप मेरे मीठे बच्चे हो। जीवन में मिठास का बहुत महत्व है। किसी भी शुभ अवसर पर एक-दो का मुख मीठा कराया जाता है। प्रसाद में भी मीठी चीज दी जाती है। फल भी वही पसन्द आता है जो मीठा हो। पक्षी भी वही मन को भाता है जो मीठा बोले। इसी प्रकार मानव भी तभी अच्छा लगता है जब उसके शब्द मीठे और मन को राहत देने वाले हों।

भगवान ने मांगी थी कड़वी जबान

कहा जाता है कि शोधकर्त्ताओं ने जब कड़वाहट की खोज करनी शुरू की तो संसार की सबसे कड़वी चीज मिली मानव की जुबान। यूँ तो कई जानवर बड़े जहरीले, हिंसक और आक्रामक होते हैं। बिच्छू, जहरीला डंक मारता है, साँप के दाँत में विष होता है, मच्छर काटकर बीमार कर देता है, शेर आदि हिंसक प्राणी मारकर खा जाते हैं, हाथी पाँवों से कुचल देता है परन्तु इनकी वाणी कभी प्रहार नहीं करती। ये शरीर को नुकसान पहुँचाते हैं पर मन तक इनकी पहुँच नहीं है। प्रकृति में भी कई कड़वी चीजें हैं। उन्हें खाकर आदमी मर भी सकता है परन्तु ये भी शरीर को ही नुकसान पहुँचाती हैं, मन को नहीं। मानसिक आघात, शारीरिक आघात से कई गुणा गहरे, घातक और लम्बे काल तक चलने वाले होते हैं। इतनी जहरीली और कड़वी चीजें संसार में होते हुए भी जबान को सबसे अधिक कड़वा इसलिए कहा गया क्योंकि यह मर्म को अर्थात् मन को आहत करती है। मानव को अन्दर ही अन्दर सुलगा देती है। उसका बदला लेने के लिए यह सुलगती आग एक दिन ज्वाला रूप धारण कर सबकुछ राख कर देती है। मन से आहत व्यक्ति अधमरे जैसे होता है। उसका शरीर गति करता दिखाता है परन्तु मन घायल की तरह तड़पता रहता है। तो भगवान ने कहा था, बच्चे, इस कड़वी जबान को, कटु दुष्टि को मुझ पर अर्पण करना, मैं भण्डारे भरपूर कर दूँगा।

नकली चीज के बदले असली वरदान कैसे मिलेगा?

हम जानते हैं, जबान कड़वी तब होती है जब पहले मन कड़वा होता है। मन कड़वा तब होता है जब अहंकार, मैं-पन और देह-अभिमान आता है। ये सभी

भण्डारे खाली करने वाले हैं। जब से ये आए मानव मन में, भारत के सोने-हीरे के मटके खाली हो गए। चीजें महंगी हो गई, मानव सस्ते हो गए। क्यों? देखिए, कोई कहे, हमारी गाय एक दिन रख लो। व्यक्ति रख लेगा। सोचेगा, मीठा दूध पीऊँगा परन्तु किसी के व्यक्ति को रखने से डरेगा। सोचेगा, पता नहीं कैसा हो? क्या कर दे? चोरी करले, धोखा कर ले। तो गुणों की कमी के कारण मानव की कीमत कम हो जाती है। इसलिए भगवान ने कहा कि तुम विकारों की कड़वाहट मेरे पर चढ़ा दो तो मैं तुम्हें हीरे जैसा बना दूँगा और भण्डारे भरपूर कर दूँगा। यहाँ भी हमने उन बच्चों की तरह नकली चीज खोजने की नादानी की। वह मिली कड़वे अक के रूप में। उसे चढ़ा दिया। अब नकली चीज के बदले असली वरदान कैसे मिलेगा? इसलिए ना हमारे सुख-शान्ति के भण्डारे भरे और ना ही धन-दौलत के।

सांसारिक प्राप्तियों के नशे का त्याग

और देखिए, हम भगवान पर भांग चढ़ाते हैं, धतूरे के फूल चढ़ाते हैं, गांजा चढ़ाते हैं। भगवान ने कहा था, नशा (अहंकार) रखना नहीं। हमने समझा कि भगवान नशीली चीजें मांग रहे हैं और चुन-चुन कर नशे वाली चीजें उन्हें अर्पित की। परन्तु क्या हम जानते हैं, सबसे ज्यादा नशीली चीजें कौन-सी हैं। किसी कवि ने लिखा है,

कनक कनक ते सौगुणा मादकता बिखराए।
एक खाए बौराय, एक देखे बौराए।।

यहाँ कनक शब्द के दो अर्थ हैं। एक अर्थ है धतूरा और दूसरा अर्थ है सोना। कवि कहता है कि धतूरे से ज्यादा नशा सोने में है। धतूरा खाने से नशा चढ़ता है परन्तु सोने को तो देखने मात्र से ही नशा चढ़ जाता है। इस संसार में हरेक मानव को अपना-अपना नशा है। पुत्र को नशा है कि मैं बहुत कमाता हूँ, मेरे पिता ने तो ढंग से घर भी नहीं बनाया पर मैंने कोठी खड़ी कर ली। पुत्रवधू को नशा है कि मैं बड़े बाप की बेटी हूँ। चार भाइयों की बहन हूँ, बहुत दहेज लाई हूँ, बहुत सुन्दर हूँ। बुढ़िया को नशा है कि मैं चार पुत्रों की माँ हूँ। बुजुर्ग को नशा है कि मैं इलाके का नम्बरदार हूँ और 20 एकड़ जमीन का मालिक हूँ। घर में सभी अपने-अपने नशे में झूमते रहते हैं और एक-दूसरे से टकराते रहते हैं। भगवान ने कहा था, किसी भी सांसारिक चीज का नशा मत रखना। ये सब चीजें अल्पकाल की हैं, प्रकृति और ईश्वर की अमानत हैं। इन्हें निमित्त भाव से और नम्रता से प्रयोग करना परन्तु हम ठहरे नादान बच्चे। बच्चों के नकली नोटों की तरह हमने भी अन्दर के नशों को छिपाए रखा और बाहरी नशीली चीजें भगवान पर चढ़ा दी। इन नकली चढ़ावों से अल्पकाल का मनोरंजन तो हुआ पर सदाकाल का रंजन नहीं हुआ। घर के सुख-शान्ति के भण्डारे भरपूर नहीं हो पाए।

परन्तु ऐसा नहीं है कि नकली चढ़ावा चढ़ाने वाले भक्तों से भोलेनाथ शिव को प्रेम नहीं है। वे प्रेम के सागर अपने भक्तों पर खूब प्रेम लुटाते हैं। उनकी नादानी से भी उनको स्नेह है। इसलिए वे नकली चढ़ावा भी इस शुभभावना के साथ स्वीकार करते हैं कि इन्हें चढ़ाने की आदत तो पड़ी। आने वाले समय में ये असली चढ़ावा अर्थात् तन, मन, धन भी अवश्य अर्पण करेंगे।

जानिए अनहद नाद को

जैसे पहली कक्षा के छोटे बच्चे जब पढ़ते हैं तो आवाज करते हैं परन्तु बड़े बच्चे, एकान्त में, मौन में पढ़ाई करते हैं। भक्ति है पहली क्लास। इसमें भक्त उच्च स्वर में गीत-संगीत, भजन, मन्त्रोच्चारण आदि करते हैं परन्तु ज्ञान मार्ग में आते ही उनकी साधना मन के जाप वाली हो जाती है। तो हे शिव भक्तो, आप इतने वर्षों से शिवरात्रि का जागरण, पहली क्लास के बच्चों जैसे उच्च स्वर से कर रहे हैं। अब अगली कक्षा में बढ़िए। वाणी से परे, निर्वाण का आनन्द लेना सीखिए। अनहद नाद और मनमनाभव का मन्त्र जानिए।

नयापन हरेक को पसन्द आता है, तो शिवरात्रि मनाने में भी नयापन लाइये। नया कीजिए, नया पाइये। कहा गया है, आप पुराना ही करेंगे तो पुराना ही पाते रहेंगे। नया करेंगे तो नया पाएंगे। तो सबसे पहला नयापन अपने चढ़ावे में लाइये। गुड़ियों की पूजा की तरह बनावटी चीजें न चढ़ाकर अपनी बुराइयों की बलि चढ़ाइये। ऐसी शिवरात्रि इस बार मनाइये। ■■■

खुल गया बुद्धि का ताला

■■■ ब्रह्माकुमार विजय, शान्ति सरोवर (सिरसा), हरियाणा

ईश्वरीय ज्ञान में आने से पूर्व और दैवी परिवार का सदस्य बनने से पूर्व मैं करीब 35 वर्षों से नियमित रूप से पूजा-पाठ करता आ रहा था। लेकिन जीवन में कुछ ऐसी घटनाएँ घटित हुईं, जिनके कारण भगवान पर से विश्वास उठ गया। ऐसा लगने लगा कि भगवान जैसी कोई सत्ता है ही नहीं और अगर है तो उसका एक ही काम है कि विजय कुमार का कोई काम नहीं होने देना तथा इसे सिर्फ असफलता ही देनी है। मुझे ऐसा लगने लगा था कि जब भी मेरे साथ कुछ बुरा होना होता है तो उसमें भगवान अपनी दस भुजाओं का बल लगाता है और जब कोई काम होना होता है तो उसमें 100 कदम पीछे हट कर मेरे हर एक कदम पर एक-एक बाधा रख देता है। ऐसे विचारों के कारण मन में भगवान के प्रति एक विरोध पैदा हो गया और मैं अक्सर मन-ही-मन कहता कि तूने जो करना है कर ले, मुझे बर्बाद करना है तो कर ले, तू अपना काम करता रह और मैं अपना काम करता रहूँगा।

गिरा औंधे मुँह

कई बार ऐसा भी मन में विचार आया कि जो लोग बेईमानी से चलते हैं, दूसरों को धोखा देते हैं या झूठ बोलते हैं, उनके हर कार्य पूर्ण हो जाते हैं, वे हर प्रकार से सम्पन्न रहते हैं और उनका हर जगह मान-सम्मान होता है। फिर मैंने भी इसी रास्ते पर चलने का विचार करते हुए ठान लिया कि अब मैं भी झूठ बोलूँगा, बेईमानी करूँगा और लोगों को धोखा दूँगा लेकिन एक-दो प्रयासों में ही औंधे मुँह नीचे गिरा जिससे और ग्लानि हुई और स्वीकार कर लिया कि बेईमानी व झूठ के रास्ते पर चलना मेरे बस की बात नहीं। हर रोज भगवान के साथ मेरा झगड़ा होता, मन बहुत अशान्त रहता और मन में भटकन छाई रहती। फिर भी मैं अपने सीधे रास्ते पर चलता रहा और यही सोचता रहा कि जो होगा, देखा जायेगा।

दिमाग की धूल उतर गई

एक बार हमारे शहर में हेल्थ-वेल्थ-हैप्पीनेस शिविर का आयोजन ब्रह्माकुमारीज़ की तरफ से किया गया। मैं इस शिविर की तैयारियों को रोज देखता था जब स्टेडियम में शाम को सैर पर जाता था। जब शिविर चालू हुआ तो सोचा, इसे भी देख लेते हैं। इसी संकल्प के तहत मैं दिनांक 20.2.17 को अपनी युगल और पुत्र के साथ इस शिविर में शामिल हुआ। वहाँ जब आत्मा और परमात्मा का परिचय करवाया गया तो दिमाग की सारी धूल उतर गई। जो दरवाजे बन्द थे, वे सब खुल गये और दिमाग पर जो ताले लगे थे, वे सब टूट गये। ऐसा लगा कि यही वह स्थान है जहाँ मुझे शान्ति मिल सकती है। इसके बाद जैसे-जैसे ज्ञान की बातें पता चलती गईं, मन शान्त होता गया और भटकन समाप्त होती गई।

जीवन में आई निर्भयता और निश्चिंतता

अब मुझे इस बात का पक्का यकीन हो गया है कि शिव बाबा ने मेरे अकेले के लिए ही इस शिविर का आयोजन किया था और मुझे अपना बना लिया है। इस यकीन के साथ ही यह भी भान हुआ कि जो बाप रोज झगड़ा करने वाले अपने बच्चे के लिये इतने बड़े शिविर का आयोजन करवा सकता है तो वह और भी क्या नहीं कर सकता! इसके बाद बाबा से कुछ भी माँगने की इच्छा ही नहीं रही। मुझे पता चल गया कि वह सब जानता है कि मेरे बच्चे को क्या चाहिए, इसके लिए क्या उचित है और क्या अनुचित है। अब विश्वास हो गया है कि बाबा मेरे साथ है और हर समय मेरा पूरा ख्याल रखता है। इससे जीवन में निर्भयता और निश्चिंतता भी आ गई है। मन अब शान्त रहता है। काम-क्रोध अब नाममात्र के ही बचे हैं। मोह, अहंकार, लालच तो खत्म ही हो गये हैं। बाबा का बनने के बाद जो मिला है, उसका सार एक भजन की चंद लाइनों में दे रहा हूँ –

जैसे सूरज की गर्मी में जलते हुए,
तन को मिल जाए तरुवर की छाया,
ऐसा ही सुख मेरे मन को मिला है,
मैं जब से शरण तेरी आया मेरे राम।

मैं बहुत ही भाग्यशाली हूँ कि मुझे बाबा ने अपना बना लिया है। मुझे बाबा का ज्ञान मिल रहा है। मैं बाबा और आप सब बहनों का, जिन्होंने मुझ पर इतनी ज्ञान की वर्षा की है, दिल की गहराइयों से धन्यवाद करता हूँ। ■■■

सजागृह में बजे रूहानी साज

■■■ ब्रह्माकुमार मुन्ना सिंह, केन्द्रीय कारागार, वाराणसी

जब कोई भी व्यक्ति किसी भी प्रकार का अपराधिक कृत्य करता है, तो उसे कारागार में डाल दिया जाता है। उसके समस्त मौलिक अधिकार छीन लिए जाते हैं। वह व्यक्ति पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ दुख का दंश झेलता रहता है। शरीर चलाने के लिए सरकार से प्राप्त भोजन और तन ढकने के लिए साधारण वस्त्रों तक ही उसका अधिकार सीमित हो जाता है। घर-परिवार तथा समाज से अलग वह मानसिक पीड़ा को सहता रहता है।

टूट चुका था अन्दर से

मेरा लौकिक जीवन अनेक प्रकार की विकृतियों से ग्रसित था। सभी प्रकार के व्यसनों और विकारों का प्रभाव चरम पर था। दिन भर शराब पीना और साथियों को पिलाना, यही रोज की दिनचर्या बन गई थी। जो कुछ भी कमाता था, शराब में खर्च कर देता था। धीरे-धीरे आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी। चोरी, बेईमानी तथा बुरी दृष्टि का अवगुण मुझ में नहीं था लेकिन क्रोध की अधिकता के कारण लोगों से झगड़े हो जाया करते थे। इसी दौराने एक थाने के चौकीदार की किसी ने हत्या कर दी और विरोधियों ने इस हत्या के आरोप में मुझे फँसा दिया। मुझे सजा हुई और मैं जेल में आ गया। जेल में बहुत परेशान था, दिन-रात परिवार की चिन्ता सताती रहती थी क्योंकि परिवार का जिम्मेवार मैं ही था। पन्द्रह दिनों के बाद लखनऊ से बनारस जेल में मेरा ट्रान्सफर हो गया। बनारस आने तक मैं अन्दर ही अन्दर टूट चुका था। सभी बन्दियों के साथ यहाँ मुझे भी काम करने के लिए कहा गया। काम से बचने के लिए मैं जेल में ही पिछले कुछ वर्षों से चल रहे ओमशान्ति के सभागार में चला गया। ओमशान्ति से जुड़े हुए कैदी भाइयों ने वहाँ मुझे प्यार से बैठाया और सभागार में लगे हुए चित्रों को दिखाते हुए ब्रह्मा बाबा के चित्र के सामने ले गये, जिस पर लिखा हुआ था, ''बच्चे, तुम चिन्ता मत करो, मैं बैठा हूँ।'' यह पढ़कर मुझे अद्भुत शांति की अनुभूति हुई। फिर खुदा का खत पढ़ा तो मेरी आँखों से अश्रुधारा फूट पड़ी और मैं थोड़ी देर अंदर ही अंदर रोता रहा। पश्चाताप के इन आँसुओं से मेरे अंदर एक अलौकिक शक्ति का संचार होने लगा। उसी समय मैंने प्रतिज्ञा की कि मैं बाबा का ज्ञान अवश्य लूँगा।

समाप्त हुई दुख की अनुभूति

दूसरे दिन मुझे ज्ञान मिला कि मैं एक अजर-अमर-अविनाशी आत्मा हूँ। शरीर विनाशी है जिसके लिए आज तक मैं बहुत कुछ करता आया। जो सदाकाल रहने वाली आत्मा है उसके लिए मैंने अभी तक कुछ किया ही नहीं। यह सोचकर बहुत ही पश्चाताप हुआ। अगले दिन परमपिता परमात्मा का परिचय, उनसे सम्बन्ध और प्राप्तियों का ज्ञान मिला। सात दिन के कोर्स के दौरान त्रिमूर्ति, सीढ़ी, कल्प-वृक्ष आदि चित्रों के द्वारा मुझे पता चला कि इस सृष्टि-ड्रामा में मेरा बहुत ऊँचा और बेहद का पार्ट है और मैं महान आत्मा हूँ। बाबा के इस अद्भुत ज्ञान को समझने के बाद विचार चला कि यदि ड्रामा मुझे दुनियावी काँटों के जंगल से निकाल कर जेल में नहीं लाता तो मेरा और अधिक पतन निश्चित था। बाबा का कितना मुझ पर उपकार है! स्वयं भगवान ने मुझे अपना बना लिया है। जिसे सारी दुनिया ढूँढ़ रही है उसने मुझे अपनी गोद में भर लिया है। यह सोचकर मेरे अंदर अपार खुशियों का पारा चढ़ने लगा। बस एक ही गीत दिल में बजने लगा कि पाना था सो पा लिया.....। इस नशे का असर इतना हुआ कि और सारे नशे बेकार लगने लगे। दुख की अनुभूति समाप्त होती गई और सुख ही सुख जीवन में भरता गया। दिल में वाह बाबा वाह का गीत बजने लगा।

क्रोध का अंत हुआ

ज्ञान समझने के बाद प्रतिदिन बाबा की मुरली क्लास में जाकर सुनना, यह मेरी दिनचर्या का हिस्सा बन गया। बाबा की मुरली सुनकर कर्मों की गुह्य गति, जीवन

की मर्यादा तथा लक्ष्य का बोध होने लगा जिससे जीवन को मूल्यनिष्ठ बनाने की प्रेरणा मिली। बाबा ने मुरली में बताया कि कम, धीरे एवं मीठा बोलो। किसी को दुख देने वाले बोल कभी नहीं बोलो। सदा सर्व को सम्मान दो और सम्मान लो, न किसी को दुख दो, न किसी से दुख लो। सभी आत्माओं को स्नेह, शुभ-भावना, शुभ-कामना और श्रेष्ठ संकल्पों का जल दो। बाबा के द्वारा बताई गई इन युक्तियों के अभ्यास से मेरे अन्दर जो क्रोध रूपी अग्नि थी वह जलकर भस्म हो गयी और इस अभ्यास ने मुझे सबका प्यारा बना दिया।

बाबा की प्रेरणा से लिखे रूहानी गीत

एक रात मेरे दिल में ख्याल आया कि जो भाई-बहनें आश्रम से आकर हमारा भाग्य बनाने की सेवा कर रहे हैं उनके स्वागत के लिए कुछ पंक्तियाँ लिखूँ। मैं सोचने लगा कि स्वागत में लोग पुष्प-माला भेंट करते हैं किन्तु जेल में साधनों का अभाव होने के कारण मैं श्रद्धा के सुमन क्यों न अर्पित करूँ। ऐसा सोच ही रहा था कि मुझे महसूस हुआ, गीत की सुन्दर पंक्तियाँ कोई बोल रहा है। मैंने कापी-पेन उठाए और लिखने बैठ गया। यह मेरे जीवन का पहला गीत था। गीत की लाइन थी --'स्वागत में आपके हैं श्रद्धा के सुमन अर्पित, स्वागत करूँ मैं आपका मन भाव से समर्पित.....।" कुछ ही देर में पूरा स्वागत गीत बनकर तैयार हो गया। अगले दिन क्लास में आश्रम से आए हुए भाइयों को मैंने वह गीत सुनाया। भाइयों ने मेरा उत्साहवर्धन करते हुए मुझे और गीत लिखने के लिए प्रेरित किया। उसके बाद मैं बाबा को याद करता और बाबा स्वयं मुझ आत्मा से रूहानी गीत लिखवाते। इस तरह मैंने 50 से भी ज्यादा गीत लिखे। अब कारागार में जब भी बाहर से बहन-भाइयों का सेवार्थ आना होता है तो मुझे स्वागत गीत सुनाने के लिए कहा जाता है और मैं पूरे भाव से सुनाता हूँ। प्यारे बाबा ने यह सेवा देकर मुझे सबका प्यार पाने का अधिकारी बना दिया।

लौकिक परिवार को भी मिला बाबा का सहयोग

बाबा का ज्ञान पाकर मेरा मन पूरी तरह से शान्त हो गया और जेल में भी मुझे अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होने लगी। जेल में मुलाकात करने मेरा परिवार और बच्चे आते तो उन्हें भी बाबा का ज्ञान समझाने लगा। मेरा बड़ा लड़का संगदोष के कारण व्यसन करने लगा था। उसे देख छोटे भी गुटखा आदि का सेवन करने लगे थे। यह मेरे लिए चिन्ता का विषय था लेकिन मैं अपने पूर्व कृत्यों को याद कर सोचता था कि यह भी मेरा ही कर्मभोग है। मैं बाबा को याद कर बच्चों को शुभ वायब्रेशन्स देने लगा। इसका असर बच्चों पर पड़ा और सभी व्यसनमुक्त होकर घर की व्यवस्था को आगे बढ़ाते हुए सफलता की ओर बढ़ने लगे। अब घर की आर्थिक स्थिति भी ठीक हो गई है और सभी भाइयों में आपसी स्नेह भी बना हुआ है। बाबा के इस चमत्कार के लिए बाबा का किन शब्दों में धन्यवाद करूँ! शुक्रिया बाबा शुक्रिया...। ■■■

जीवन कठिन तब लगता है जब हम स्वयं को बदलने के बजाए परिस्थितियों को बदलने का प्रयास करते हैं। कमजोर शरीर और मजबूत मन हो तो काम चल सकता है परन्तु कमजोर मन और बलिष्ठ शरीर हो तो काम नहीं चलेगा। जीवन के विकास के रास्ते शरीर से नहीं, मन से तय होते हैं। हम लोगों से प्यार से बात करते हैं लेकिन कभी-कभी हमारी सोच उतनी प्यारी नहीं होती। रिश्ते बोल और व्यवहार से नहीं, हमारी सोच से बनते हैं। ध्यान से सोचिये...आपकी हर सोच उन तक पहुँच रही है । जैसे घर निर्माण में एक-एक ईंट का महत्व होता है, वैसे ही चरित्र निर्माण में एक-एक विचार का महत्व है इसलिए अपने विचारों को शुद्ध बनाइए

अन्न की बर्बादी अक्षम्य अपराध है

ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी (हरियाणा)

तकरीबन हर घर-परिवार में यह नियम होता है कि कोई भी अपनी थाली में झूठा भोजन नहीं छोड़ेगा। झूठन छोड़ने से अन्न की बेकदरी होती है और यह अन्न दाता परमात्मा का निरादर माना जाता है।

खाना फेंकने की बुरी आदत

एक परिवार के छोटे बच्चे, कड़े अनुशासन के बावजूद भी थाली में खाना छोड़ देते थे अर्थात् उन्हें खाना फेंकने की आदत-सी हो गई थी। बच्चों की माँ कहती, बच्चो, जितना खा सको उतना ही थाली में लो, यदि और चाहिए तो दोबारा ले लो परन्तु जब बच्चे बड़े हो गए तब भी उनकी यह आदत नहीं गई। बार-बार समझाने के बावजूद भी बच्चे हर बार खाना छोड़ देते और उसे फेंकना पड़ता। उनकी माँ एक ऐसी गृहिणी थी, जो कचरे के डिब्बे में डालने के बजाए अनाज के एक-एक दाने को भी इकट्ठा कर या तो चिड़ियों को या चींटियों को डाल दिया करती थी।

अजीब तरह का दृश्य

एक बार यह परिवार गर्मियों की छुट्टियों में बच्चों को लेकर अपने रिश्तेदारों के यहाँ ट्रेन द्वारा जा रहा था। एक स्टेशन से इन्हें दूसरी ट्रेन बदलनी थी, जो तीन घन्टे बाद मिलनी थी। स्टेशन पर उन्होंने अपने घर से पैक करके लाया हुआ खाना निकाला और बच्चों के संग खाने लगे। बच्चों ने आदत के अनुसार प्लेट में खाना अधिक ले लिया, फिर प्लेट में छोड़ भी दिया और माँ से नजरें बचाकर बचा हुआ खाना नजदीक रखे डस्टबिन में डाल दिया। तभी एक अजीब तरह का दृश्य देखने को मिला। प्लेटफार्म पर घूमने वाले कुछ बच्चे तुरन्त उस कचरे के डिब्बे में फेंका हुआ खाना निकाल कर खाने लगे और बाकी बच्चे भी शायद अधिक खाना खोजने के प्रयास में आपस में लड़ते हुए उसी डस्टबिन को उलट-पुलट करने लगे।

माँ व बच्चों की आँखें हुई सजल

दोनों बच्चे, जिन्होंने डस्टबिन में खाना फेंका था, टकटकी लगा कर यह दृश्य देख रहे थे। प्लेटफार्म की तमाम गन्दगी भी उस डस्टबिन में पड़ी हुई थी। बच्चों को यह समझते देर नहीं लगी कि हम जिस खाने को झूठा छोड़ कर अन्न की बरबादी करते आये हैं वह किसी अन्य के लिए कितना अमूल्य है! यह सोचकर बच्चों का मन भर आया। क्या भूख ऐसी होती है? उनकी माँ भी यह सब देख रही थी और अपने बच्चों को भी यह नजारा देखते हुए देख रही थी और कह रही थी, बच्चो, आज तक तुमने कितना अन्न बरबाद किया है? माँ व बच्चों की आँखें सजल हो रही थी। बच्चों ने प्रतिज्ञा करते हुए माँ से कहा, माँ, आज के बाद हम कभी भी खाने की बरबादी नहीं करेंगे। एक-एक कण को बचायेंगे क्योंकि आज के इस दृश्य ने हमें जीवन भर की सीख दे दी अर्थात् भोजन की कद्र करने की शिक्षा दे दी।

उपरोक्त घटना से सीख लेते हुए हम भी यह संकल्प लें कि हम में से हर कोई स्वयं भी, अपने बच्चों को भी, अन्न के एक-एक दाने का सम्मान करना सिखाएँगे। एक भूखा व्यक्ति ही बता सकता है कि अन्न का वास्तविक मूल्य क्या है? जिस खाने को हम बहुत ही बेदर्दी से फेंक देते हैं उसके कण-कण के लिए अनेक मोहताज होते हैं इसलिए अन्न की कदर करना सीखें।

अन्न का सदुपयोग करें

वर्तमान समय देखने को मिलता है कि बड़े-बड़े शादी-समारोहों, धार्मिक आयोजनों, मांगलिक कार्यों आदि में खाने-खिलाने की एक प्रकार की हौड़ चल पड़ी है। खाना-खिलाना तो ठीक है परन्तु अन्न का दुरुपयोग भी बहुत हो रहा है। थाली में इतना छोड़ते हैं या बाद में

बचा हुआ इतना भोजन फेंकते हैं कि कई भूखे लोगों का पेट भर सकता है। इसलिए अन्न का दुरुपयोग छोड़, अन्न का मान करें। अन्न ही मनुष्य व पशु-पक्षियों के लिए प्रमुख प्राकृतिक संसाधन है। इसकी बरबादी अक्षम्य अपराध भी है।

जैसा अन्न वैसा मन

वर्तमान समय मनुष्य करुणा, दया, सहानुभूति, संवेदनशीलता जैसे गुणों से वंचित है। ये गुण मनुष्य के अन्दर शुद्ध अन्न द्वारा ही पनपते हैं। कहावत है, जैसा अन्न वैसा मन। यदि मनुष्य केवल पेट भरने में जुटा है या केवल स्वाद-वश तला हुआ, अधिक मसाले वाला भोजन खाता है तो इस भूलवश बीमारियों से ग्रस्त रहने लगता है। वह भूल जाता है कि अन्न रोगी भी बना सकता है। इसलिए अन्न केवल सात्विक तरीके से ही ग्रहण करें।

अन्न खायें ईमानदारी के धन से

मनुष्य को चाहिए कि वह ईमानदारी से कमाया धन ही अन्न के लिए खर्च करे अन्यथा बेईमानी के धन से आया एक कण भी शरीर के अन्दर जाकर हलचल मचायेगा। हजम ही नहीं हो पायेगा। अपच व मरोड़ जैसी बीमारियाँ सदा बनी रहेंगी। डॉक्टरों को मोटी रकम देकर भी इलाज नहीं हो पायेगा। एक के बदले सौ गुणा चुकाना पड़ेगा।

■■■

शिव साजन मिला सलोना है

■■■ ब्रह्माकुमार निर्विकार नरायन श्रीवास्तव, मिश्रिख तीर्थ (उ.प्र.)

संगमयुग पर अजर-अमर शिव साजन मिला सलोना है।
ऐसे साजन को पा करके कभी नहीं अब रोना है।।

पतियों का पति मिला है तुमको, सदा सुहागिन रहती हो।
उसकी रोज पढ़ाई से तुम विश्व की रानी बनती हो।।
ऐसा साजन मिला अनोखा अवसर अब नहीं खोना है।
संगमयुग पर अजर-अमर शिव साजन मिला सलोना है।।

देहभान में आते ही पवित्रता नष्ट हो जाती है।
माया के बंधन में बंधकर, दुःख-अशान्ति बढ़ जाती है।।
देही में जो दाग लगे, उन्हें ज्ञान-अमृत से धोना है।
संगमयुग पर अजर-अमर शिव साजन मिला सलोना है।।

पाँच विकारों की माया को तुमको नाच नचाना है।
पवित्रता की अँगुली देकर गोवर्धन को उठाना है।।
आग-कपूस इकट्ठे रहकर, पवित्रता नहीं खोना है।
संगमयुग पर अजर-अमर शिव साजन मिला सलोना है।।

हीरे जैसा जन्म इस समय, संगम पर जो पाया है।
परमपिता के बच्चे बन, सच्चे वारिस कहलाया है।।
बाप-शिक्षक-सद्गुरु से, अब बनना सच्चा सोना है।
संगमयुग पर अजर-अमर शिव साजन मिला सलोना है।।

बाप और वर्से की याद से, राज सतयुगी पाओगे
याद अगर भरपूर नहीं तो, चन्द्रवंशी में आओगे
कल्प पूर्ववत् ज्ञान और तप के बीज इस समय बोना है।
संगमयुग पर अजर-अमर शिव साजन मिला सलोना है।।

जिस्मानी प्रीतम और रूहानी प्रीतम

■■■ ब्रह्माकुमारी रेनू, अग्रोहा, हिसार (हरियाणा)

युगों से, जन्मों से, वर्षों से शिव प्रीतम की राह तकती आत्मा सजनी को आखिर पुरुषोत्तम संगमयुग की सुहावनी वेला में, रूहानी माशूक शिव से मिलन की सुखद अनुभूति हो ही गई। देहभान की दुर्गन्धयुक्त कलियुगी, विकारी जिस्मानी प्रेम की तुलना में कितना मनभावन व गुणों की भीनी-भीनी सुगन्ध से ओत-प्रोत है आत्मा सजनी का शिव साजन से ये रूहानी संगम। शिव साजन ही तो है दिल को आराम देने वाला दिलाराम, रूह को ताकत देने वाला रहबर, मन को मनभावन मौन में टिकाने वाला मनमीत और तन के तनाव को मिटाने वाला सच्चा प्रीतम।

प्रीतम शब्द में जो प्रीत शब्द समाया है, वही इसके यथार्थ अर्थ को सिद्ध करता है। जिसके भीतर बिना स्वार्थ के, बिना किसी शर्त के अपनी प्रियतमा के प्रति केवल प्रीत-ही-प्रीत हो, वही हो सकता है सच्चा प्रियतम। आत्मा रूपी प्रियतमा जो है, जैसी है, उसे जानते हुए भी प्रीत की रीत निभाता ही रहता है। यह भी सत्य है कि वो प्रियतम, अपनी प्रियतमा की कमियाँ निकालने की युक्तियाँ भी गुप्त रीति से रचता ही रहता है ताकि आत्मा भी उसके समान निर्मल, पावन व शीतल बन जाए।

जहाँ इस रूहानी साजन का ध्येय आत्मा सजनी को फर्श से अर्श की ओर ले जाने का, पवित्रता के उच्च शिखर पर पहुँचाने का और देने ही देने का है, इसके बिल्कुल विपरीत, देहधारी साजन का एकमात्र लक्ष्य झूठे सुख और झूठे प्रेम प्रदर्शन की आड़ में अपने विकारों की पिपासा को शान्त करना है। इसके लिए वह दैहिक सजनी की पवित्रता का घात करने में क्षणिक भी विचार नहीं करता। देहधारी साजन, संभाल-सुरक्षा की ज़िम्मेवारी लेने के लिए जिस परम्परा का निर्वाह करता है उसे समाज में 'विवाह' की संज्ञा दी जाती है जिसमें बाह्य रूप से तो शृंगार, खुशी व उत्सव जैसा माहौल नज़र आता है परन्तु पर्दे के पीछे सजनी के मातम का करुण दृश्य छिपा होता है। त्रासदी तो यह है कि जो सजनी हलाल होने जा रही है, उसे भी इसका आभास नहीं और वो भी इसे सुखद घटना मान खुशी-खुशी अपनी बलि देने की तैयारी करती है। आधुनिक युग में फेरों के माध्यम से क्षणिक सुख देने के वायदे कर सजनी को हलाल करने का करुण दृश्य, देवी के मन्दिर में बलि चढ़ने वाले बकरे की स्मृति दिलाता है।

नहला-धुलाकर, पुष्प माला अर्पित कर, माथे पर सिन्दूर लगा कर बकरे का भी घात कर दिया जाता है। कुछ-कुछ ऐसा ही तथाकथित लौकिक प्रियतम और प्रियतमा एक-दूसरे के साथ कर रहे हैं। बकरे के तो केवल शरीर का घात होता है परन्तु यहाँ तो विवाह परम्परा के बाद दोनों के तन और आत्मा का घात होना शुरू हो जाता है। वो आत्मा जो पवित्रता से दीप्तीमान थी, जिस्मानी प्रेम से जल कर, कालिमा को प्राप्त हो जाती है। इस विवाह परम्परा के बाद शुरू होती है उसके दु:ख-दर्द, तनाव और शारीरिक बीमारियों की एक अन्तहीन यात्रा।

इसके सर्वदा विपरीत; निराश, उदास, तड़पती और विकारों की चिता में जलती प्रियतमा को जब शिव प्रीतम का संग मिलता है तो वो उसके रंग में स्वयं को रंगती चली जाती है। जैसे भीषण गर्मी से मुरझा चुके पौधे, सावन की फुहारें आने से खिल जाते हैं, झूम उठते हैं, वैसे ही तथाकथित देहधारी प्रीतम के विकारों की प्रचण्ड अग्नि में झुलसी आत्मा रूपी प्रियतमा भी शिव साजन की ज्ञान-बरसात से अपने सत्य, शीतल स्वरूप में स्थित होकर, पवित्रता की सुगन्ध से पुलकित होकर, आनन्द की लहरों में लहराने लगती है। प्रीतम उसे आत्मिक-स्वरूप की बिन्दी, पवित्रता के कंगन, रूहानियत के काजल और मधुरता की मुसकराहट से सजाता है। कलियुगी मायावी दु:खों की ग्रहचारी से बचाने के लिए अष्ट-शक्तियों रूपी अष्ट-रत्नों की अँगूठी पहनाता है। खुशी में सदा नाचते रहने की पायल, दिव्यगुणों की चमकती ड्रेस, विजयी-रत्नों में आने की वैजयन्ती माला पहना कर उसका वरण कर लेता है और प्रीत की रीत निभाता है। अब स्वयं से पूछिये, क्या मैं प्रियतमा तैयार हूँ, शिव प्रीतम के द्वारा सजने के लिए? ■■■

खुश रहने के लिए महत्वपूर्ण बिन्दु

■■■ देवेन्द्र सिंह, नरेला मंडी (दिल्ली)

खुशी एक शक्ति है जो व्यक्ति को सकारात्मकता और आत्मविश्वास से भर देती है। हर व्यक्ति के लिए खुशी का अर्थ अलग होता है। विद्यार्थियों के लिए परीक्षा में अच्छे अंक लाना ही उनकी ख़ुशी होती है, तो किसी कर्मचारी के लिए अच्छे पद पर पहुंचना खुशी का कारण होता है। कुछ को घूमना-फिरना पसंद है तो कोई संगीत में अपनी खुशी खोजता है। कहने का तात्पर्य यह है कि हर व्यक्ति उस जगह खुश रहता है जहाँ उसका मन संतुष्टि पाता है और जिस चीज को वो सकारात्मक रूप से देखता है। किन्तु एक व्यक्ति ऐसा भी होता है जो हर स्थिति में खुश रहता है। यह वो व्यक्ति है जिसने आत्मा में सुषुप्त मूल खुशी को जागृत कर लिया है। आज हम कुछ ऐसे ही तरीकों की चर्चा कर रहे हैं जिनको अपना कर हम अपने मन को खुश रख सकते हैं।

खुद को अपनायें

खुश रहने के लिए सबसे जरूरी है कि हम खुद को बिना किसी शर्त के अपनायें और खुद को प्यार करें। इस तरह हम अपना ध्यान रख पाते हैं और अपने स्वास्थ्य, अपने आत्मविश्वास और अपने मन की शांति को बनाये रख सकते हैं। खुद को प्यार करना कोई स्वार्थ नहीं है बल्कि यह हमारे लिए जरूरी भी है क्योंकि जब तक हम खुद को प्यार नहीं करेंगे तो दूसरों को भी प्यार नहीं दे सकते। हमने सुना है कि जैसा व्यक्ति अपने बारे में सोचता है वैसा ही उसे दूसरा व्यक्ति भी नज़र आता है।

गड़े मुर्दे न उखाड़ें

हर व्यक्ति के जीवन में कुछ अच्छे तो कुछ बुरे दिन जरूर आते हैं किन्तु यह जरूरी नहीं है कि हम हर वक्त बीते हुए कल के बारे में विचार करके खुद को परेशान और दुखी रखें। हम अपने वर्तमान और भविष्य के बारे में विचार करें और उसे संवारने की कोशिश करें। इससे हमें इस वक्त भी खुशी मिलेगी और हम अपने भविष्य को लेकर भी संतुष्ट रहेंगे।

अपनी तुलना किसी से न करें

तुलना हम में हीन भावना भी ला सकती है और घमंड भी इसलिए तुलना से जितना हो सके उतना बचें। तुलना करते वक़्त अगर हमको लगा कि कोई हमसे अच्छा और आगे है तो हम खुद के प्रति गलत विचार बना लेते हैं और यदि हमको ऐसा लगा कि हम उससे अच्छे हैं तो हममें घमंड आ सकता है, जो हमारे पतन का कारण बनेगा।

प्रर्याप्त नींद लें

हर व्यक्ति को शरीर की आवश्यकता अनुसार पर्याप्त सोना या आराम करना जरूरी है। इससे हम मानसिक और शारीरिक दोनों रूपों से स्वस्थ रहते हैं, जो हमारी ख़ुशी के लिए बहुत जरूरी है। नींद से पहले भी अपने मन को शांत रखना जरूरी है ताकि हम आध्यात्मिक-नैतिक चैन की नींद ले सकें। इसके लिए सोने से पहले टीवी, रेडियो और रोशनी इत्यादि बंद कर दें। मन शांत करने के लिए कोई अच्छी किताब पढ़ें या राजयोग का अभ्यास करें।

बड़े सपने देखें

सपने देखने में हमारा कोई पैसा तो लगता नहीं किन्तु सपने हमको प्रेरित जरूर करते हैं। इसलिए हम बड़े-बड़े सपने देखें, जो हमें खुशी देते हों। जिनको पूरा करने के लिए हम मेहनत कर सकते हैं और जिनके पूरा होने पर हमको दुगुनी खुशी मिले।

इच्छाओं को कम करें

इच्छाओं की बाढ़ में न बहें। हम अपनी इच्छाओं को ध्यान से चुनें और उन्हें जरूरत के हिसाब से पूरा करने की

कोशिश करें ताकि मन को संतुष्टि प्राप्त हो सके।

घृणा से बचें

किसी से नफरत करना, किसी के प्रति बुरे विचार रखना या फिर किसी से बदले की भावना रखना भी हमें संतुष्ट नहीं रहने देता। घृणा करने वाले अपने बारे में ना सोचते हुए हमेशा दूसरों को नुकसान पहुँचाने के बारे में सोचते हैं जिसकी वजह से ये अपना ही नुकसान कर लेते हैं। आप ऐसा बनने से जरूर बचें। अपने जीवन को समझें और जानें कि ये बहुत ही छोटा है। इसे व्यर्थ के कार्य में ना लगाते हुए खुद के लिए जीयें।

तनावमुक्त रहें

तनाव व्यक्ति का सबसे बड़ा दुश्मन है क्योकि इसकी वजह से व्यक्ति ना सिर्फ खुद दुखी रहता है बल्कि अपने आसपास के लोगों की खुशी भी छीन लेता है। तनावग्रस्त व्यक्ति का स्वभाव बदल जाता है। इनका चिड़चिड़ापन इनको किसी भी चीज पर ध्यान केन्द्रित नहीं करने देता जिससे इनकी सफलता की सम्भावना कम हो जाती है। अत: खुश रहने के लिए तनावमुक्त होना बहुत जरूरी है।

झूठ न बोलें

हमने सुना है कि एक झूठ को छुपाने के लिए सैकड़ों झूठ बोलने पड़ते हैं और इससे हमारे मन पर भारी बोझ पड़ जाता है। इन झूठों में ही हम हमेशा उलझे रहते हैं। हमें खुद समझ में नहीं आता कि हमें कब, क्या करना चाहिये और हमने कब, क्या किया या कहा था। इसलिए अपने मन को हल्का रखें और मन को हल्का रखने के लिए झूठ से बचें।

भयमुक्त रहें

हमारे दुखों का कारण हमारा भय भी हो सकता है। भय, व्यक्ति को मन ही मन कमजोर बनाता जाता है और उसकी सकारात्मकता को छीन लेता है। भय किसी का भी हो सकता है जैसे काम का भय, असफल होने का भय, मृत्यु का भय, किसी के खो जाने का भय या किसी के साथ रहने का भय इत्यादि। हम अपने भय को पहचानें और उसे दूर करने का प्रयास करें।

ध्यान करें

हर चीज का समाधान राजयोग में मिल जाता है। राजयोग हमें मानसिक, आध्यात्मिक और शारीरिक रूप से मजबूती प्रदान करता है। ये हमको सांसारिक आकर्षणों से दूर ले जाकर जीवन के असली लक्ष्य तक पहुंचाता है। ध्यान में स्वयं पर और पिता परमात्मा पर केन्द्रित होना होता है। इससे मन खुश रहता है और संतुष्टि की चरम सीमा प्राप्त होती है। ■■■

अब नया सवेरा आयेगा

■■■ ब्रह्माकुमार वेनी माधव, भाण्डुप (मुम्बई)

राजयोग एक राजमार्ग है, मंजिल तक पहुँचायेगा,
शिक्षक जिसका परमपिता है, दिव्यगुणों से सजायेगा,
धर्म-भेद और जाति-भेद के झगड़े सभी मिटायेगा,
दु:ख की अंधियारी रात गई, अब नया सवेरा आयेगा।

जल-थल-नभ पर राज्य तुम्हारा, पहले खुद पर राज्य करो,
राजऋषि हो दैवीकुल के, मिट्टी से न खेल करो,
अभी खुला भण्डार प्रभु का, किस्मत वाला पायेगा,
सद्गुरु-शिक्षक-परमपिता है, अब नया सवेरा आयेगा।

योग पुराना है भारत का, जो शिव भगवान सिखाता है,
प्राचीन देश भारत ही है, जो जग को राह दिखाता है,
तकदीर में जिसके सुख-शान्ति है, वो पवित्र बन जायेगा,
साफ़-सफ़ाई होगी जल्दी, अब नया सवेरा आयेगा।

गंगा-जल गंदा कर डाला, मानव ने दुष्कर्मों से,
पतित-पावनी कहते आये, पावन हुए न वर्षों से,
भूतों-पतितों का अंश न होगा, कोई रावण नहीं जलायेगा,
स्वर्ग रचयिता शिव कहता, अब नया सवेरा आयेगा।

अव्यक्त पालना के 50 वर्ष

■■■ ब्रह्माकुमार सूर्य, आबू पर्वत

जिस भगवान को पुकारते थे, जिसके आने की राह तकते थे, जिससे सत्य ज्ञान लेना चाहते थे, वो स्वयं पहले साकार प्रजापिता ब्रह्मा के तन में आया, उसने आकर सम्पूर्ण ज्ञान दिया। हमने उनके तीन रूप देखे – वो प्यार का सागर परमपिता, वो ज्ञान का सागर परम शिक्षक और सभी की गति-सद्गति करने वाला परम सद्गुरु। इन तीनों रूपों से उसने सबकी पालना की। भाग्यवान थे वे ब्रह्मावत्स जो उनकी साकार पालना के अधिकारी बने।

प्यार देकर हर लिए दुख

सन् 1969 से जब से ब्रह्मा बाबा ने अव्यक्त स्वरूप धारण किया तो उनके सम्पूर्ण फरिश्ते रूप में प्रवेश करके शिव बाबा पुन: दादी हृदयमोहिनी जी के तन में अवतरित होने लगे और यही सिलसिला अब तक चलता रहा। उन्होंने राजयोग की सूक्ष्म स्थितियों का ज्ञान दिया। हमारी स्थिति सम्पूर्ण कैसे बने, इसकी राह दिखायी। एक-एक आत्मा को वरदान दिए। अपना प्यार देकर सभी के दु:ख हरे। इस पालना के अब 50 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। बहुत-बहुत भाग्यवान हैं वे आत्माएँ जिन्होंने इस पालना का सुख लिया। जिन्होंने अपने परमपिता से दृष्टि ली और वरदानों से अपनी झोली भरी।

ये परमात्म कार्य 83 वर्षों से अनवरत रूप से चलता आ रहा है। पहले साकार पालना फिर अव्यक्त पालना और अब अति सूक्ष्म पालना। संसार के कोटि-कोटि लोग जिन बातों से अनभिज्ञ हैं, ऐसे अनेक दृश्य हमने अपनी आँखों से देखे, जो लोगों की कल्पनाओं से भी परे हैं। उनका संक्षिप्त वर्णन यहाँ प्रस्तुत है –

सारे बोझ बाप को दे दो

जब ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हुए तो पहले कुछ वर्षों में शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा, जिन्हें हम बापदादा कहते हैं, सप्ताह में दो बार अवतरित हुआ करते थे। हमने उनको हजारों बार साकार में अवतरित होते देखा। उन्होंने ज्ञान की गंगा बहायी। सृष्टि के सूक्ष्म रहस्यों को हमारे समक्ष खोला। जीवन में निश्चिंत कैसे रहें, अनेक विधियाँ सुनायी। तनावमुक्त, बेफिक्र बादशाह बनने का राज समझाया। अध्यात्म की सर्वश्रेष्ठ स्थिति साक्षीभाव में सबको स्थित किया। ऐसी कोई ज्ञान की गुह्य बात नहीं बची जो उन्होंने नहीं बतायी, जैसे – 'मन के सारे बोझ बाप को दे दो। जो बाप सारे संसार के बोझ उठाने वाला है, क्या अपने बच्चों का बोझ नहीं उठायेगा।' ये महावाक्य सुनाकर सभी के बोझ हर लिए। जब हजारों की सभा में बाबा ने ये बात कही तो उनके प्यार में सभी मग्न हो गए और ऐसे वायब्रेशन्स फैल गए, मानो सभी बोझमुक्त और सम्पूर्ण रूप से हल्के हो गए। ये थी उनकी अलौकिक पालना।

प्रभु-प्रेम की तरंगों में लहरा उठती थी सभा

वे सर्वशक्तिवान हैं, त्रिकालदर्शी हैं, निराकार सृष्टि के बीज हैं, सबके परमपूज्य ईश्वर हैं परंतु जब वे धरा पर आते थे तो अपना भगवानपन परमधाम में छोड़कर, अपने परिवार के बीच आते थे, महान आत्माओं के मध्य आते थे और बार-बार याद दिलाते थे कि मैं तुम्हारा निराकार परमपिता हूँ, मैं तुम महानात्माओं से मिलने आया हूँ, मैं अपने परिवार में आया हूँ। यह सुनकर 25-30 हजार भाई-बहनों की सभा प्रभु-प्रेम की तरंगों में लहरा उठती थी। हरेक को अनुभव होता था कि बाबा प्यार के सागर हैं, वे मुझे बहुत प्यार कर रहे हैं। एक साथ हजारों-हजारों को प्यार की अनुभूति करा देना, ये दिव्य कर्म केवल प्यार के सागर का ही है। कोई मनुष्य आत्मा तो इसकी कल्पना भी नहीं कर सकती।

तुम देवकुल की महान आत्मा हो

उन्होंने हमारे स्वमान को जगाया। हम सबकुछ भूल चुके थे। माया के वश हो गए थे। शास्त्रों में इन बातों को,

इन शब्दों में वर्णन किया गया है कि ब्रह्मा भी चिरनिद्रा में सो गए। विष्णुजी भी लंबे काल निद्रा में लीन हो गए। हम सभी, जो महान आत्माएँ थी, वो विस्मृत होकर विकारों की गोद में अज्ञान निद्रा में सो गयी। उन्होंने आकर हमें श्रेष्ठ स्मृतियाँ दिलाकर जगाया। हमारी सोयी हुई शक्तियों को जगाया। कहा, बच्चे, तुम साधारण नहीं हो, देवकुल की महान आत्मा हो। तुम ईश्वरीय शक्तियों से भरपूर मास्टर सर्वशक्तिवान हो। उन्होंने न केवल कहा बल्कि हमें भी ऐसा आभास हुआ कि हमारी सोयी हुई शक्तियाँ जागृत हो गयी हैं। उन्होंने याद दिलाया कि तुम कल्प-कल्प के विजयी रत्न हो। इस माया को तुमने अनेकों बार जीता है, अब भी तुम्हारी जीत निश्चित है। इस तरह बल देकर उन्होंने हमें मायाजीत बना दिया।

तुम्हारी विजय निश्चित है

उन्होंने हमें स्मृति दिलायी, तुम शिव-शक्तिसेना हो। तुम्हारा सुप्रीम कमाण्डर स्वयं सर्वशक्तिवान है। माया चाहे कितनी भी पावरफुल क्यों न हो, तुम्हारी विजय निश्चित है। यह सुनकर लाखों-लाखों ब्रह्मावत्स कामजीत, क्रोधमुक्त, अहंकार से परे और मैं-पन के त्यागी बन गए। धन्य हैं वे ब्रह्मावत्स जिन्होंने सम्मुख भगवान की मधुर वाणी सुनी। जो उसकी अमृत वर्षा में भीगकर पतित से पावन हो गए, अमर हो गए। जिन्होंने उनकी प्यार भरी दृष्टि पाकर स्वयं को निहाल कर लिया। जब वे दृष्टि देते थे तो कोई विघ्नों से मुक्त हो जाता था, तो कोई बीमारियों से मुक्त हो जाता था। कोई अशरीरी होकर गहन शांति की अनुभूति में चला जाता था, तो कोई योगयुक्त होकर सभी दुखों से मुक्त हो जाता था। जिन्होंने ये अनुभव किये, उनकी तो सोई हुई तकदीर ही जग गयी।

तुम्हारे योगयुक्त कर्म होंगे युगों तक अनुकरणीय

हम केवल अपने लिए सोचते थे, उन्होंने हमारे अंदर विश्व कल्याण का श्रेष्ठ भाव जागृत किया। अध्यात्म की जिस ऊँची मंजिल को हम बहुत कठिन और असंभव मानते थे, उन्होंने सरल कर दिया। हमारे विचारों के स्तर को बहुत महान और विशुद्ध कर दिया। हमारी दृष्टि व भावनाएँ बदल दी और हमें एहसास करा दिया कि तुम्हारे एक-एक संकल्प का प्रभाव सारे विश्व पर पड़ता है। सम्पूर्णप्रकृति पर पड़ता है। तुम्हारे बोल दूसरों के लिए वरदानी हैं। तुम्हारे योगयुक्त कार्यों का युगों तक सारा संसार अनुकरण करेगा।

छा जाता था गहन सन्नाटा

हमने देखा, जब 30 हजार की सभा में उनका अवतरण होता था तो चारों ओर गहन सन्नाटा छा जाता था। सभी के मन निर्संकल्प हो जाते थे। जब वे दृष्टि देते थे तो अनेक आत्माओं को उनसे विभिन्न वरदान मिल जाते थे। किसी को योगी भव का वरदान मिल गया, तो किसी को निर्विघ्न भव का वरदान मिल गया। किसी को विजयी भव का वरदान मिला, तो कोई सदा के लिए पवित्र हो गए। एक सुंदर महावाक्य आप सभी के लिए प्रस्तुत है,'जो बच्चे मास्टर सर्वशक्तिवान के नशे में रहते हैं, विघ्न व समस्याएँ उनके पास आ नहीं सकती और सफलता उनके आगे-पीछे घूमती है।' ये गहन बातें सुनाकर उन्होंने हमें बहुत शक्तिशाली और निश्चिंत कर दिया।

संकल्प शक्ति के अनेक गुह्य रहस्य ज्ञान के सागर ने स्वयं स्पष्ट किए। वे ऐसे रहस्य हैं जहाँ तक मनोवैज्ञानिक सोच भी नहीं पाते। उन्होंने कहा, तुम सवेरे 3 से 5 बजे तक जितना चाहो मुझसे मिलन मना सकते हो। मैं परम सद्गुरु भोलानाथ बनकर बैठता हूँ। मुझसे जो चाहो वो ले सकते हो और इसका अनुभव लाखों-लाखों योगी आत्माओं ने किया।

तीन स्मृतियों का तिलक

उन्होंने हमें स्वमान याद दिलाकर कहा, तुम वही इष्ट देव-देवियाँ हो, जिनकी मंदिरों में पूजा हो रही है। तुम सदैव यही कहो कि सबकुछ अच्छा होगा। तो अगर कुछ बुरा होने वाला होगा तो वो भी ऐसी सोच से अच्छा हो जाएगा। इतनी बड़ी बात कही। हमें वरदानी स्वरूप की याद दिलायी और एक सुंदर प्रैक्टिस करवायी कि रोज सवेरे उठकर संकल्प करो कि मेरे साथ सबकुछ बहुत अच्छा होगा। उठते ही तीन स्मृतियों का तिलक

लगाओ, मैं विजयी रत्न हूँ, निर्विघ्न हूँ, सफलतामूर्त्त हूँ और अनेक आत्माओं ने अनुभव किया कि सवेरे तीन-चार बार याद करने से ये तीनों बातें जीवन के लिए वरदान बन गयी।

श्रेष्ठ भाग्य की स्मृतियाँ

उन्होंने हमें हमारे श्रेष्ठ भाग्य की स्मृतियाँ दिलायी और कहा, तुम सवेरे उठते ही याद किया करो, मेरे जैसा भाग्यवान कोई नहीं। मैं बहुत सुखी हूँ, बहुत धनवान हूँ और ये याद करके खुशी में डांस किया करो। इससे तुम्हारा सोया हुआ भाग्य जाग जायेगा। तुम स्थूल धन से भी सम्पन्न हो जाओगे और तुम्हारे सुखों के दिन शुरू हो जायेंगे। इस तरह लाखों-लाखों ब्रह्मावत्सों ने सुंदर संकल्पों से स्वयं को चार्ज किया, खुशियों से भरा और इससे उनके जीवन की राहें आसान हो गयी। ये थी परम शिक्षक की सूक्ष्म व श्रेष्ठ पढ़ाई। उनके अलावा ऐसा अन्य कोई पढ़ा ही नहीं सकता।

जीवन को चमकाया पूर्णिमा की तरह

इन 50 वर्षों में उन्होंने अनेकों को महान योगी बनाकर आने वाले महाविनाश के समय में सभी को मदद करने के लिए तैयार किया। कितनों को सम्पूर्ण पवित्र बनाकर कलयुग की गहरी रात में पूर्णिमा की तरह चमका दिया। करोड़ों मनुष्य आत्माओं को उनसे नया जीवन प्राप्त हुआ। करोड़ों ने सहज तनावमुक्त जीवन जीने का मार्ग सीखा। यदि उनके द्वारा प्राप्त अनुभवों को लिपिबद्ध किया जाए तो एक विशाल ग्रंथ का निर्माण हो जाए। उनको सम्मुख बैठे देखकर अनेकों की जन्म-जन्म की कामनाएँ पूर्ण हो गयी। विशाल सभागार में उनके वायब्रेशन्स इतने शक्तिशाली रूप से व्याप्त हो जाते थे कि जिसको जो चाहिए था, वही मिल जाया करता था। यह अनुपम अनुभूति सिवाए परमपिता के और कोई करा ही नहीं सकता।

विकारों को किया मूल सहित नष्ट

मैंने उनको इस धरा पर अवतरित होते हजारों बार देखा। मेरा जीवन उनकी इस अव्यक्त पालना से धन्य-धन्य हो गया। कुछ भी कल्पना नहीं, सबकुछ परम सत्य है। उन्होंने दिव्य बुद्धि प्रदान की। संकल्पों को महान बना दिया। दृष्टि में अलौकिकता भर दी। सभी विकारों को मूल सहित नष्ट कर दिया और इस अलौकिक जीवन में पवित्रता की सम्पूर्ण शक्ति प्रदान कर दी। मैंने ये सबकुछ अपनी आँखों से देखा, अलौकिक बुद्धि से अनुभव किया, केवल भावना नहीं। उनकी पालना को पाकर सचमुच न केवल जीवन खुशियों से भर गया लेकिन मैं उनके अति समीप पहुँच गया। उनसे अनेकों वरदानों की प्राप्ति हो गयी। उसने मुझे भविष्य के महान कार्यों के लिए तैयार कर दिया। कभी-कभी सोचते हैं कि उनकी इस पालना का रिटर्न तो हम चारों युगों में भी नहीं दे पायेंगे। अब तो एक ही संकल्प रहता है कि उनसे जो शक्तियाँ और वरदान मिले हैं, उनका प्रयोग विश्व कल्याण के कार्य में कर लें, सभी के दुख-दर्द दूर करने में, समस्याओं को मिटाने में कर लें। हजारों बार उनकी दृष्टि मिली। सुंदर-सुदर वरदान मिल गए। जो सोचा भी नहीं था, वो प्राप्त हो गया। अब उसकी पालना का रिटर्न देना है। यही मन में श्रेष्ठ इच्छा है कि उनके समान बनकर वैसी ही पालना सबको दें, जैसी परमपिता ने हमें दी है।

वरदानी स्वरूप से सेवा

अब अव्यक्त बापदादा का साकार में आने का पार्ट पूर्ण हुआ। अब वे कहते हैं कि मैं तुम्हारे पास बार-बार आया, हजारों बार आया। अब तुम मेरे पास आ जाओ। मैंने तुम्हें अपना सम्पूर्ण ज्ञान दे दिया, अब तुम ज्ञान के स्वरूप बन जाओ। मैंने तुम्हें जो वरदान दिए हैं, अब अपने उस वरदानी स्वरूप से सेवा करो। अब उनकी पालना सूक्ष्मलोक से होगी। पहले से सौ गुणा ज्यादा मदद वो हम सबको कर रहे हैं। हम इन सूक्ष्म रहस्यों को जानकर उनकी पालना के पात्र बनें और उनसे सबकुछ प्राप्त कर लें। ये अंतिम अवसर है, उनसे जो चाहें वो ले लें। इसके बाद तो कुछ ही समय में ये संसार धर्मराजपुरी बनने जा रहा है । मानसिक रोग करोड़ों-करोड़ों लोगों को त्रस्त कर देंगे। सभी को अपने कर्मों का हिसाब देना होगा। तब हम सभी वरदानी आत्माओं को, सभी मनुष्यों की मदद करनी होगी। अब इसके लिए हम स्वयं को तैयार कर लें। ■■■

गरीब पैदा होना पाप नहीं, गरीब मरना पाप है

■■■ ब्रह्माकुमार सपन भाई, ओमशान्ति भवन, इन्दौर

सांसारिक जीवन में एक कहावत है कि गरीब पैदा होना पाप नहीं बल्कि गरीब मरना पाप है। जब हम भौतिक जगत की बात करते हैं तो गरीब होना किसी अभिशाप से कम नहीं है। अभिशाप समझी जाने वाली इस गरीबी को मिटाने के लिए मनुष्य ने अपनी अंत: और बाह्य दोनों अवस्थाओं का पतन कर लिया है। बाहरी सुख-सुविधाओं और भौतिक विलासिता की वस्तुओं को ही उसने सच्चा सुख मान लिया है जो कि क्षणभंगुर है।

ज्यादा धन कमाने के लालच से नैतिक पतन

आज संसार का प्रत्येक मनुष्य धनवान होना चाहता है। सवेरे उठने से लेकर रात को सोने तक उसका सारा समय सिर्फ इन्हीं बातों में व्यर्थ जाता है कि किस तरह से साम-दाम-दंड-भेद को अपनाकर भी वो ज्यादा से ज्यादा धन कमाए। परन्तु ज्यादा से ज्यादा धन कमाने के लालच में वह स्वयं का, स्वयं के परिवार का, आने वाली पीढ़ियों का और सारे समाज का इस तरह से नैतिक पतन करता है कि कई जन्मों तक समाज इस विकृति से बाहर नहीं आ पाता।

सौ रुपये कमाने के लिए हजार पाप

आज शायद ही कोई ऐसा मनुष्य होगा जो धन कमाने के लिए झूठ, फरेब, धोखाधड़ी या जालसाजी नहीं करता होगा। आज के मनुष्य के लिए दूसरों को दुख देना रोजमर्रा का काम हो गया है। ''ईमानदारी'' शब्द सिर्फ किस्से-कहानियों में रह गया है और मानव सौ रुपये कमाने के लिए कम से कम एक हजार बार पाप करता है। पाप कर्म से कमाए गए पैसे से अपने को बहुत भाग्यशाली मानने लगता है और अपने लिए अल्पकाल के सुख के साधन इकट्ठे करने लगता है।

दूषित धन से सन्तान का दूषित मन

ऐसी मानसिक विकृति के साथ विकारी भाव से ग्रसित मनुष्य विकारयुक्त संतान उत्पन्न करता है तथा गलत तरीके से कमाए गए धन से ही अन्न खरीदता है। दूषित धन से खरीदा गया अन्न भी दूषित हो जाता है जिसको खाकर मन में भांति-भांति के विकार उत्पन्न होते हैं और तन पर भी बुरा असर पड़ता है। ऐसे दूषित धन का उपयोग जब संतान की पालना में होता है तो वयस्क होती संतान में अनेक प्रकार की विकृतियाँ और मनोविकार उत्पन्न होने चालू हो जाते हैं। उनकी विकृत मांगों को पूरा करने के लिए वह और भी भिन्न-भिन्न पापकर्मों में लिप्त होता जाता है। गलत तरीके से पैसे कमाने वाले मलिन बुद्धि माता-पिता यह समझ ही नहीं पाते हैं कि उनकी पालना के कमी क्या रह गयी है। यह वृत्तांत आज किसी एक परिवार का नहीं अपितु सारे समाज का है जिसकी वजह से चारों तरफ अपराध और दानवीय वृत्ति का बोलबाला है।

धनवान होने के लालच में मनुष्य आत्मा पापकर्म करती जाती है और अपने सर पर बहुत सारे पापों का बोझा चढ़ा लेती है। जीवन के अंतिम समय में इसी बोझ से बोझिल वह पश्चाताप की अग्नि में झुलसती हुई शरीर त्याग करती है और पाप कर्म की बहुत सारी भोगना अगले जन्म में भोगने के लिए अपने साथ भी ले जाती है। अंतत: वह गरीब घर में पैदा होकर अपने नीच कर्मों के फलस्वरूप और भी अधोगति को प्राप्त होती है।

श्रेष्ठ कर्मों की कमाई

दूसरी तरफ, परमपिता परमात्मा शिव से सृष्टि-चक्र का सत्य ज्ञान प्राप्त करने वाली आत्माओं के लिए अंतिम जन्म में गरीब होना वरदान रूप सिद्ध होता है। वे जान जाती हैं कि धन की गरीबी का कारण है श्रेष्ठ कर्मों की गरीबी। इसके लिए वे श्रेष्ठ कर्म कमाने में रत हो

जाती हैं। जो आत्माएँ, परमपिता परमात्मा शिव द्वारा सिखाए गए राजयोग और कर्मों की गुह्य गति को जान लेती हैं, वे अपना पुण्य का खाता बढ़ाती जाती हैं। पुण्य और पाप का ज्ञान ना सिर्फ नए पाप कर्म करने से रोकता है बल्कि नए पुण्य बढ़ाने में भी सहयोग देता है। गरीब होते हुए भी, ईमानदारी और सच्चाई-सफाई के साथ कमाया गया धन इस प्रकार बरकत देता है कि स्वयं को, पूरे परिवार को और समाज को सुख-शान्ति-आनंद-प्रेम की निरंतर अनुभूति होती रहती है। जब ईमानदारी से कमाया गया धन मानव-समाज और प्रकृति को सतोप्रधान बनाने अर्थ ईश्वरीय कार्य में लगाया जाता है तो सर्व विघ्न स्वत: ही समाप्त होकर सफलता निश्चित हो जाती है।

परमपिता परमात्मा शिव द्वारा दी गयी श्रीमत प्रमाण देह और देह के सम्बन्धों और पदार्थों से उपराम और नष्टोमोहा होकर जब ऐसी आत्मा शरीर का त्याग करती है तो धर्मराज को भी उसे नमस्कार करना पड़ता है। उस आत्मा के पुण्य कर्म उसको पूरे 21 जन्मों के लिए स्वर्ग के राज्य का अधिकारी बना देते हैं।

संसार के मनुष्यों को यदि गरीब-निवाज परमपिता परमात्मा शिव का ज्ञान समझ में आ जाये और उसे अपने जीवन में उतार लें तो वे गरीब परिवार में जन्म लेकर भी कभी गरीब नहीं मरेंगे और जीते जी स्वयं को पापकर्मों द्वारा श्रापित करने से बच जाएँगे। विश्व की सारी आत्माओं को समान रूप से यह अधिकार प्राप्त है कि कलियुग के अंत के भी अंत समय में, इस संगमयुग में, जब स्वयं भगवान धरा पर आकर सच्चा-सच्चा गीता ज्ञान और जीवन जीने की कला सिखा रहे हैं, तो इसे समझ कर अपने जीवन में धारण कर, भाग्य बना लें और सदा के लिए सभी प्रकार की गरीबी से मुक्त हो जाएँ। ■■■

जागो मेरी बहना

■■■ ब्रह्माकुमार राजेन्द्र सिंह, एटा (उ.प्र.)

ओमशान्ति का ध्वज लेकर, घर-घर में अलख जगा देना।
ओमशान्ति का दीप जलाकर, नई किरण चमका देना।
ओमशान्ति का पाठ पढ़ाकर, ज्ञानामृत बरसा देना।
सोने का अब समय नहीं है, आलस-निद्रा त्यागो।
जागो मेरी बहना, सबको जगाओ, खुद जागो।।

कुछ पाने के लिए भाईयो, कुछ तो खोना पड़ता है।
जीवन-भर दुष्कर्म करो तो अंत में रोना पड़ता है।
पावनता को सत्-कर्मों का बीज भी बोना पड़ता है।
डिगे बीच में तो सब विधि से हाथ भी धोना पड़ता है।
करो समर्पण शिव के आगे, कलियुग का सुख त्यागो।
जागो मेरी बहना, सबको जगाओ, खुद जागो।।

हा-हाकार मचा दुनिया में, रणभेरी बजने वाली।
कहीं भूकम्प नाश करता है, कहीं लहर आने वाली।
कहीं-कहीं पर बाढ़ लील गई, कई शहर की हरियाली।
ये विनाश के ट्रेलर हैं, अब महाप्रलय आने वाली।
जहाँ कहर है, वहाँ पड़ी है, भागो-भागो-भागो।
जागो मेरी बहना, सबको जगाओ, खुद जागो।।

शुद्ध आत्मा तभी बनेगी जब सद्भाव सही होगा।
जीवन के पूरे पर्दे पर कहीं भी दाग नहीं होगा।
दुनिया-भर की माया से जब तक वैराग्य नहीं होगा।
तब तक अलख निरंजन शिव का मन में भाव नहीं होगा।
भाग्यवान बाबा के बच्चे, कोई न होय अभागो।
जागो मेरी बहना, सबको जगाओ, खुद जागो।।

ज्ञानामृत ने जगाई ज्ञान की ज्योति

■■■ ब्रह्माकुमारी दुर्गावती, जौनपुर (उत्तर प्रदेश)

मैं सन् 1985 से ईश्वरीय ज्ञान में चल रही हूँ। बचपन से ही मैं बहुत पूजा-पाठ और व्रत- उपवास आदि करती थी। परिवार के सभी लोग भी भक्ति-भाव वाले थे। मैं शिव के मंदिर में जाकर शिव की मूर्ति की धुलाई कर पूजा करती थी। फिर भी मन में क्षण-भर ही खुशी रह पाती थी। मेरी जिन्दगी में अशांति और तनाव बहुत रहता था। पारिवारिक खट-पट बहुत थी। मेरे जेठ भाई ज्ञान में चलते हैं। वो आश्रम से ज्ञानामृत पत्रिका ले आते थे। उसे पढ़ते थे। एक दिन मैंने सोचा कि यह ज्ञानामृत पढ़ कर देखूँ, इसमें क्या लिखा है? मैंने ज्ञानामृत को पढ़ना शुरू किया। उसे पढ़ते-पढ़ते मैं इतनी लीन हो जाती थी कि और कोई काम सूझता ही नहीं था। लेकिन मन में निश्चय नहीं होता था कि यह ज्ञान इतना सच्चा है।

मैं नित्य ज्ञानामृत पढ़ती रही। धीरे-धीरे मुझे आत्मा-परमात्मा का ज्ञान समझ में आने लगा। मैंने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थानीय शाखा से सात दिन का राजयोग का कोर्स कर रोज आश्रम जाना शुरू कर दिया। बाबा की मुरली सुनकर मन बहुत प्रसन्न रहने लगा। ईश्वरीय ज्ञान के बारे में मैं दूसरे लोगों को भी बताने लगी। रोज सुबह मुरली सुनने का नशा छाने लगा। कहीं सुबह मेरी आँख लग जाए और मुरली छूट जाए, ऐसी मेरे मन में सावधानी बनी रहने लगी । मैं रोज शिवबाबा को याद करके सोती और बाबा को यही कहती कि बाबा अमृतवेले जगा देना।

ज्ञानामृत के अध्ययन तथा बाबा के ज्ञान से मुझे समझ में आया कि मैं एक अविनाशी आत्मा हूँ, परमपिता परमात्मा शिवबाबा की संतान हूँ, हम सब आत्माएँ भाई-भाई हैं। ज्ञान की इन बातों ने मेरे अंदर इतना उत्साह भर दिया कि मैं नियमित रूप से अमृतवेले और शाम को भी राजयोग का अभ्यास करने लगी। शांति और आनंद की अनुभूति होने लगी। अब मुझे बाबा से बहुत शक्ति मिलती है। बाबा मुझे बहुत अच्छी पालना दे रहे हैं। मैं सभी भाई-बहनों से कहना चाहती हूँ कि भगवान एक परमपिता शिव हैं, जो निराकार, ज्योतिबिंदु स्वरूप हैं। वो अजन्मे हैं, अभोक्ता हैं और कल्याणकारी हैं। अब अन्तिम समय चल रहा है। उन्हें पहचान कर, उनसे वरदान ले लो।

ईश्वरीय ज्ञान से जीवन में आया परिवर्तन

■■■ ब्रह्माकुमार धर्मपाल सिंह, रामपुर (उत्तर प्रदेश)

सन् 1989 में रामपुर में मेरी नियुक्ति एक प्राइवेट स्कूल में हो गयी। कुछ वर्ष पश्चात् वहाँ के ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में मेरी युगल जाने लगी और बाद में मैं भी आश्रम जाने लगा। सात दिन का कोर्स करने के पश्चात् हम दोनों नियमित मुरली क्लास करने लगे। सन् 1997 में निमित्त बहनों के साथ ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय (मधुबन) जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस समय डायमण्ड हॉल बनकर तैयार हुआ था। शाम को 7:00 बजे ब्रह्माबाबा के अव्यक्त तन में और गुलजार दादी के साकार तन में शिव बाबा आये, मुरली सुनायी, इसमें स्वर्ग में जाने जैसी अनुभूति हुई। वहाँ हम और अधिक उमंग-उत्साह में थे। भगवान से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ज्ञान में चलने से पहले मैं बहुत भयभीत और चिंतित रहता था। किसी एक बात को लेकर व्यर्थ संकल्प चलते रहते थे। दृष्टि-वृत्ति सब खराब हो गई थी। ज्ञान में चलने के पश्चात् परिवर्तन आने लगा। व्यर्थ संकल्प मिटने लगे। प्रभु चिंतन शुरू हो गया। अब अपने विद्यालय में मैं क्लास में सभी विद्यार्थियों को ध्यान कराता हूँ।

मेरा अनुभव है कि अमृतवेले का योग शक्तिशाली हो तो हम दिन भर योगयुक्त रहते हैं। इससे हमारी आत्मा रूपी बैटरी चार्ज होती है। बाबा से संकल्प करते ही कार्य हुआ ही पड़ा है। शिवबाबा पर पूर्ण निश्चय ही सफलता की कुंजी है। इस संसार में कोई भी कार्य असंभव नहीं है। हर समस्या का समाधान शिवबाबा है। ■■■

जिसे ढूँढ़ रही थी, वह मिल गया

■■■ ब्रह्माकुमारी हेमलता, कल्याण (मुम्बई)

मेरा जन्म मुम्बई शहर में एक धार्मिक एवं सम्पन्न परिवार में हुआ तथा 14 वर्ष की उम्र में ही एक अच्छे परिवार में शादी हो गई। मैं और मेरे पति भगवान शिव और श्रीकृष्ण की बहुत ही भक्ति करते थे। परिवार में सब प्रकार से सुख था परन्तु मन में वैराग्य-वृत्ति पूरे जोरों पर थी। ऐसा लगता था कि मैं क्यों साँसारिक जीवन जी रही हूँ? मन उदास रहता था। कभी-कभी तो मरने के विचार भी आ जाते थे। एक बार मैं मुम्बई की खाड़ी में मरने के लिए जा ही रही थी कि मेरा छोटा बेटा रोने लगा। उसे देखकर सोचा कि मैं मर गई तो इसे कौन संभालेगा।

सन् 1976 की बात है, एक दिन हम पूरा परिवार मुम्बई घूमने गये। क्रोस मैदान में ब्रह्माकुमारियों का मेला लगा था। मेला देखने के बाद बड़ी दीदी जी से दृष्टि एवं टोली (प्रसाद) मिला। तत्पश्चात् रमेश भाई और ऊषा बहन ने शिव-अवतरण स्लाइड शो दिखाया, जिसमें लाल प्रकाश का गोला गुलजार दादी जी में अवतरित होते देखा। ऐसा दिव्य-साक्षात्कार देखकर दिल गद्‌गद् होने लगा। आँखों से खुशी के आँसू निकलने लगे। घर लौटकर आने के बाद रात्रि को 2 बजे फिर से आँख खुल गई और वही लाल प्रकाश आँखों के सामने आ गया और कानों में गीत गूँजने लगा – 'वसुधा के इस आँचल में....।' इसी साक्षात्कार ने मेरा जीवन ही बदल दिया।

दूसरे दिन मेरे युगल मुझे नजदीकी ब्रह्माकुमारी आश्रम में लेकर गये। निमित्त बहन ने हमें बहुत ही मधुर वाणी से आत्मा का पाठ पक्का कराया और कहा कि आप 5000 वर्ष पुराने, भगवान के बिछुड़े हुए बच्चे वापस उसके पास आ गये हो। इसी वाक्य से निश्चय बैठा कि हो न हो जिसे मैं ढूँढ़ रही थी, वह यही है।

हम मुरली (बाबा की वाणी) सुनने लगे। बच्चे भी साथ में आने लगे। तीन माह में ही पवित्रता की धारणा पक्की हो गई। खानपान की अशुद्धता भी छोड़ दी। मैं और मेरे युगल मधुबन में अव्यक्त बापदादा से मुलाकात करने पहुँचे। बापदादा के मुख से महावाक्य सुने। बाबा से दिव्य-शक्ति भरकर हम वापस लौटकर आये। कल्याण सेवाकेन्द्र पर नियमित रूप से ज्ञान में चलने लगे।

लौकिक परिवार की ज़िम्मेवारी निभाते हुए अलौकिक सेवाएँ करते रहे। बच्चे भी ज्ञान-योग में पक्के होते जा रहे थे। पिछले 42 वर्षों से ज्ञान में समर्पित बुद्धि होकर चल रहे हैं। मेरी लौकिक बेटी भी समर्पित रूप से 25 साल से कल्याण सेवाकेन्द्र पर अपनी सेवाएँ दे रही है। दिल अब तो यही गीत गाता है – तुम तो यहीं कहीं बाबा, मेरे साथ-साथ हो। आते नज़र नहीं पर मेरे आस-पास हो। ■■■

मुझे सच्चा रास्ता मिल गया

■■■ ब्रह्माकुमार महेश, तिहाड़ जेल

मेरा जन्म एक सम्मानित ब्राह्मण परिवार में हुआ। बचपन से ही मैंने कोई अभाव नहीं देखा इसलिए जिद्दी स्वभाव का हो गया। अगर कोई काम मेरे मन के अनुकूल नहीं होता तो मैं क्रोध में आग-बबूला हो जाता था। मेरा अच्छा-खासा व्यापार था मगर क्रोधी स्वभाव के कारण पिछले 12 वर्षों से तिहाड़ जेल में बन्द हूँ।

जब मैं जेल में आया तो लगा कि अब तो कष्टों की अति हो गई है, अब मैं पागल हो जाऊँगा। बहुत तनाव में रहने लगा था। फिर एक दिन, एक मित्र ने कहा, चलो तुम्हें शान्ति दिलवाते हैं और वह मुझे जेल में चल रहे ओमशांति के कार्यक्रम में ले गया जहाँ ब्रह्माकुमारी बहनों ने बताया कि तुम इस शरीर को चलाने वाली दिव्य प्रकाश स्वरूप चैतन्य आत्मा हो। यह शरीर नश्वर है। इसके बाद 10 मिनट योगाभ्यास करवाया। योग से शांति का ऐसा अनुभव हुआ जो पहले कभी नहीं हुआ था। मैं खुशी के मारे मन ही मन सोचने लगा कि परमात्मा मुझे मिलने जेल में भी आ गया। फिर ज्ञान का साप्ताहिक कोर्स पूरा करके मुरली पढ़ना शुरू किया। ब्रह्माकुमारी बहनों के निरंतर प्रयास से हम कई कैदी भाई अब रोज राजयोग का अभ्यास करते हैं और मुरली पढ़ते हैं। अब मेरे मन से निकलता है, शुक्रिया बाबा, आपने मुझे पागल होने से बचा लिया। अब मुझे सच्चा रास्ता मिल गया है। मेरा क्रोध कम हो गया है और ईश्वरीय ज्ञान का ही नशा चढ़ा रहता है। परिवार वाले भी मेरे में हुए परिवर्तन को देख बहुत खुश हैं। बाबा ने मेरी सारी पीड़ाएँ हर ली हैं। मैं धीरे-धीरे सभी बंधनों से मुक्त होता जा रहा हूँ। अब तो सिर्फ एक ही कामना है, जैसे मेरा भला हुआ है, ऐसे ही सबका हो, सब के विकार दूर हों, सभी बन्धनों से मुक्त हों, राजयोग की शिक्षा सबको मिले। इस ईश्वरीय कार्य में तन-मन-धन से अपने आपको समर्पित करने के लिए मैं तैयार हूँ। ■■■

विरोधी को बनाया सहयोगी

■■■ ब्रह्माकुमारी विनीता, होडल (हरियाणा)

मैं पिछले तीन सालों से ज्ञान में चल रही हूँ। मेरे युगल को ज्ञान में आये दस महीने ही हुए हैं। मैं बाल्यकाल से ही परमात्मा शिव की भक्त थी। हमेशा उनकी पूजा-पाठ और सोमवार का व्रत करती थी। अन्य सभी देवी-देवताओं की भी पूजा करती थी।

था कुछ अधूरा-सा

पन्द्रह साल पहले मेरी शादी ऐसे परिवार में हुई जहाँ बहुत कम भक्ति-पूजा का माहौल था। मेरे और परिवार के विचारों में तालमेल ना होने पर भी मैंने अपने आपको परिवार के रंग में रंग लिया। दो बच्चों (बेटा-बेटी) की माँ बनी। सब कुछ होने पर भी कुछ अधूरा-सा था। मन अशांत था। पूरे दिन अकेलापन खाता था। घर के लोगों को कहीं आना-जाना पसंद नहीं था।

मन में उठे सवाल

पाँच साल पहले हम अलग घर बनाकर सास-ससुर सहित रहने लगे। ज्यादा बंधन होने के कारण मैं चिड़चिड़ी रहने लगी। गुस्सा बहुत ज्यादा आता था। एम.ए.पास होने पर भी मैं अपनी मर्जी से सांस भी नहीं ले सकती थी। एक दिन घर में क्लेश होने पर मन में आया कि जान दे दूँ लेकिन बच्चों के बारे में सोचकर रुक गई। मेने मन में सवालों की झड़ी लग गई कि ये सब क्या हो रहा है? क्यों हो रहा है? मेरे साथ ही ऐसा क्यों? मैं हूँ कौन? ये सब कौन हैं? क्या भगवान ऐसा कर रहा है? रामायण, भगवत गीता, शिवपुराण आदि सब पढ़ डाले फिर भी अशान्ति और चिंता छाई रही।

हाथ लगी 'ज्ञानामृत' पत्रिका

एक दिन दरवाजे की घंटी बजी, एक आदमी ने मेरे हाथों में 'ज्ञानामृत' पत्रिका पकड़ाई और चला गया। यह पत्रिका पिछले कई सालों से हमारे घर पर आ रही थी। मेरे ससुर जी ने लगवा रखी थी। परन्तु उन्हें इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। अन्य अखबारों के साथ यह भी रद्दी में चली जाती थी। मेरे हाथों में तो वो पहली बार आई थी। मैंने जैसे ही पहला पेज खोला, चमत्कार हो गया। मेरे सभी सवालों के जवाब उस पत्रिका में मिलते गए। पूरी पत्रिका पढ़ ली। असीम शान्ति की अनुभूति हुई। मेरी खोई हुई याददाश्त वापस आ गई। पत्रिका में 'अवेकनिंग विद ब्रह्माकुमारीज' इस टी.वी.कार्यक्रम के बारे में भी लिखा था। मैंने उसे देखना शुरू किया। उसमें बताया गया कि एक सप्ताह का कोर्स ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर करें। ससुराल में इसकी इजाजत नहीं मिली। गर्मी की छुट्टियों में मायके जाना हुआ। वहाँ जाकर मैंने सेवाकेन्द्र का पता किया और कोर्स पूरा किया। मुझे आज भी याद है, सेवाकेन्द्र पर पहला कदम रखते ही मेरी आँखों में आँसुओं की धारा बहने लगी थी। निमित्त बहन जी ने मुझे गले से लगाकर, बाबा की मीठी बच्ची कहकर चुप करवाया था।

खत्म हुई शिकायतें

इसके बाद वापस ससुराल आकर नई ऊर्जा के साथ सेवा में लग गई। अब मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं थी। सब अच्छे लगने लगे थे। अब रोज मुरली फोन पर आने लगी। सारा खजाना बाबा ने मुझे घर बैठे दे दिया। रोज अमृतवेले योगाभ्यास करने लगी। रोज बाबा को पत्र लिखती कि मुझे भी मधुबन बुला लो। एक तरफ बाबा से मेरा प्यार बढ़ता जा रहा था और दूसरी तरफ पति, सास, ससुर सब विरोधी थे। मैंने योगयुक्त हो खाना बनाना शुरू कर दिया। प्रातः ढाई बजे से योग करना शुरू कर दिया।

बदल लिया खुद को

गुप्त रीति से मैं बाबा को भोग लगाती। अपनी अलमारी में बाबा की फोटो रख ली। मैं और मेरा बाबा

दोनों कल्प बाद फिर से मिल गए थे। बाबा भी मुझ पर हँसते, मैं खुद तो बंधन में थी ही, बाबा की फोटो को भी अलमारी में बंधन में डाल दिया। आज मैं बहुत खुश हूँ। मुझे समझ में आ गया कि यह सब मेरे ही कर्मों का हिसाब-किताब है, वही चुक्ता हो रहा है। जब भी मैं कमजोर महसूस करती हूँ तो एक वरिष्ठ भाई की बात याद कर लेती हूँ कि लोग वही होंगे, परिस्थिति वही होगी, तुम्हें बदलना होगा और मैंने खुद को बदल लिया।

युगल को हुआ अनुभव

एक दिन मैं योग में बैठी थी, आँखें बन्द थी। आँखें खोली तो देखा, युगल पाँव में झुके हुए थे और हाथ जोड़ कर कह रहे थे, आज मैंने तुम्हारे अन्दर लक्ष्मी को देखा। यह मेरे लिए सबसे बड़ा चमत्कार था। बाबा ने उस आत्मा को भी अनुभव करा दिया। मेरा मार्ग सरल हो गया। युगल ने कहा, मुझे भी ज्ञान सीखना है। फिर एक ब्रह्माकुमार भाई ने उनको घर पर ही दो महीने कोर्स करवाया। वहाँ भी परिवार की तरफ से परीक्षा आई परन्तु जीत बाबा की हुई।

खुलता गया एक-एक बंधन

एक दिन हम (युगल) दोनों किसी काम से बाबा के सेवाकेन्द्र के आगे से जा रहे थे। इन्होंने मुझे बताया कि यह ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र है। तब मैंने बाबा से कहा, बाबा, मैं आपके घर के सामने से जा रही हूँ, आप मुझे अन्दर नहीं बुलाओगे क्या? जब हम वापस लौटे तो इन्होंने मेरे बिना कहे बाइक सेवाकेन्द्र के आगे रोक दी और कहा, जाओ, बाबा से मिलकर आओ। मेरी आँखों में पानी आ गया। बाबा मुझे कितना प्यार करते हैं, मैंने देख लिया। मैं तो बिजली की तरह अन्दर भागी। ये अन्दर नहीं आए। पहली बार मैं बहनों से मिली। मीठी और मिलनसार बहनों ने मुझे सतगुरुवार का भोग भी दिया। फिर वो इनको भी भोग देने बाहर आई। सेवाकेन्द्र के अन्दर आने का निमंत्रण भी इन्हें दिया पर इन्होंने टाल दिया। घर आने पर इन्होंने कहा, वो बहन जी तेज धूप में नंगे पाँव मुझे भोग देने खुद बाहर आई। ये प्यार और समर्पण मुझे बहुत अच्छा लगा। अगली बार मैं भी सेवाकेन्द्र चलूँगा। इस प्रकार मेरा बाबा रोज एक-एक बंधन खोलता गया।

समय उड़ रहा है

एक दिन ऐसा था जब वक्त कटता नहीं था और आज ऐसा है कि समय उड़ रहा है। पहले, अमृतवेले के बाद मैं अकेली मुरली पढ़ती थी और अब हम दोनों अमृतवेले के बाद मुरली पढ़ते हैं। फिर चिंतन करते हैं। जो आत्मा पहले विरोधी थी, आज वो ही आत्मा मेरी सहयोगी बन गई है। वाह बाबा, यह आत्मा कितनी मीठी है। शुक्रिया बाबा।

सेवाकेन्द्र की निमित्त बहन जी हमें बाबा मिलन में मधुबन लेकर गई। वहाँ पैर रखते ही मैंने बाबा को धन्यवाद किया और फिर युगल को भी धन्यवाद दिया। मैं बहुत सौभाग्यशाली आत्मा हूँ। अब सायंकाल हम दोनों और दोनों बच्चे भी योग करते हैं। घर जैसे बाबा का सेवाकेन्द्र बन गया है। मैं सभी सहयोगी आत्माओं का दिल से धन्यवाद करती हूँ। ■■■

एक निराशावादी व्यक्ति बादलों के अंधकारमय हिस्से को देखता है और उदास होता है, एक दार्शनिक व्यक्ति दोनों हिस्सों को देखता है और अरुचि दिखाता है जबकि आशावादी व्यक्ति बादलों को ही नहीं देखता, वह तो उनसे भी ऊँची उड़ान भरता है।

फॉर्म – 4

नियम 8 के अंतर्गत अपेक्षित पत्रिका का विवरण

1. **प्रकाशन :** ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड (राजस्थान) - 307510
2. **प्रकाशनावधि :** मासिक
3. **मुद्रक का नाम :** ब्र.कु. आत्म प्रकाश
   क्या भारत के नागरिक हैं? हाँ
   पता – उपरोक्त
4. **प्रकाशक का नाम :** ब्र.कु. आत्म प्रकाश
   क्या भारत के नागरिक हैं? हाँ
   पता – उपरोक्त
5. **सम्पादक का नाम :** ब्र.कु. आत्म प्रकाश
   क्या भारत के नागरिक हैं? हाँ
   पता – उपरोक्त

सम्पूर्ण स्वामित्व : प्रजापिता ब्र.कु.ई.वि.विद्यालय। मैं, ब्र.कु. आत्म प्रकाश, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

(ब्र.कु. आत्म प्रकाश)
सम्पादक

क्रोध का खानदान

ब्रह्माकुमारी प्रिया, उल्हासनगर, मुम्बई

पहली सम्बन्धी है बहना, भ्रम से लागे जो गहना,
चलती है जो उम्र-ए-वृद्ध, जिसका नाम है जिद्द।
दूजी साथी है बेगम, जो भरती लोगों में गम,
जिसने रचा इतिहास का किस्सा, जिसका नाम है हिंसा।
तीजा सम्बन्धी है पिता, जलाता जो जीते जी चिता,
जो करता अच्छाई का संहार, उसका नाम है अहंकार।
चौथी सम्बन्धी है बेटी, जो है बुराई की पेटी,
जो लोगों की जुबान में घुली, उसका नाम है चुगली।
पांचवाँ सम्बन्धी है बेटा, जिसने बुरे संग में है लपेटा,
रह नहीं सकता जो क्रोध के बगैर, उसका नाम है वैर।
छठा सम्बन्धी है पोता, जिसके वश मानव रोता,
यह करता बुराई की रचना, जिसका नाम है घृणा।
सातवीं सम्बन्धी है बहू, इसके बारे में क्या कहूँ,
जो दिखाये गलत दिशा, उसका नाम है ईर्ष्या।
आठवीं सम्बन्धी है पोती, जो करती है बुरी गति,
जो कहती, बात तू अभी मान, उसका नाम है
देह-अभिमान।

सदस्यता शुल्क :

(भारत) वार्षिक: 100 /- आजीवन : 2,000 /-
(विदेश) वार्षिक - 1,000/- आजीवन - 10,000/-

शुल्क ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता :

'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510
(आबू रोड) राजस्थान, भारत।

For Online Subscription: **Bank**: State Bank of India, **A/c Holder Name :** Gyanamrit, **A/c No:** 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan, IFSC Code: SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
Mobile: 09414006904, 09414423949, **Email:** hindigyanamrit@gmail.com, omshantipress@bkivv.org

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, मुख्य सम्पादक एवं प्रकाशक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबूरोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन-307510, आबूरोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया।
मुख्य सम्पादक - ब्र.कु. आत्मप्रकाश, **सम्पादक** - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन

फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये :
E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org, omshantiprintingpress@gmail.com, Website: gyanamrit.bkinfo.in

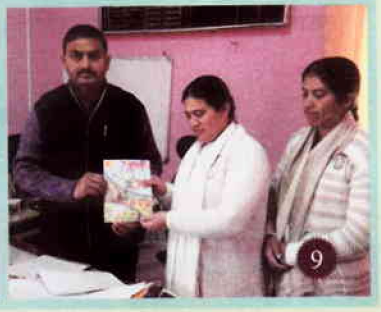

1.होडल- सेवाकेन्द्र के रजतजयन्ती समारोह का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.उषा बहन, तहसीलदार भ्राता गुरुदेव जी, पार्षद भ्राता देवेश जी, समाजसेवी भ्राता राजकुमार गोयल, ब्र.कु.शुक्ला बहन तथा ब्र.कु.अनुसूईया बहन। **2.उमरेड-** झीलबोडी भिवापुर ग्राम में आयोजित यौगिक खेती व व्यसनमुक्ति कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित हैं सरपंच भ्राता गंगाधर टाकरे, ब्र.कु.अशोक भाई, ब्र.कु.रेखा बहन, कृषि अधिकारी भ्राता गुलाबराव गावंडे, ब्र.कु.योगेश भाई तथा ब्र.कु.देशमुख भाई। **3.झोझूकलाँ (कादमा)-** 'सुविचार से सुनहरा संसार' विषयक कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु.उषा बहन, ब्र.कु.वसुधा बहन, सरपंच भ्राता दलबीर सिंह गांधी, जिला अग्रणी बैंक प्रबंधक भ्राता विजय कुमार तथा अन्य। **4.नरवाना-** 'खुशियों की सौगात' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मार्किट कमेटी की चेयरपर्सन बहन रणवीर कौर, ब्र.कु.सीमा बहन तथा ब्र.कु.ओंकारचन्द भाई। **5.अरोली (भंडारा रोड)-** संगीतमय राजयोग शिविर में मंच पर उपस्थित हैं भ्राता नत्थू नान्हे, भ्राता दामोदर देशमुख, ब्र.कु.उषा बहन, ब्र.कु.प्रेमलता बहन, ब्र.कु.ललिता बहन तथा ब्र.कु.अविनाश भाई। **6.बहल-** नि:शुल्क नशा मुक्ति कैम्प में रोगियों की जाँच करते हुए और दवा देते हुए ब्र.कु.डॉ.रामकुमार जी। **7.शहीद भगत सिंह नगर-** पुलिस अधीक्षक भ्राता हरीश दियामा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुमन बहन तथा अन्य। **8.जकातवाडी (सातारा)-** मराठी कलाकार भ्राता किरण माने को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शांता बहन। **9.भावानगर-** एस.डी.एम.भ्राता घनश्यामदास शर्मा को ईश्वरीय साहित्य देते हुए ब्र.कु.सरस्वती बहन।

1.मलाड- 'मलाड मस्ती' कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु.संजय भाई, विधायक भ्राता असलम शेख, ब्र.कु.कुंती बहन, ब्र.कु.नीरजा बहन तथा भ्राता गुंजन उतरेजा। **2.बरनाला**- 'जीवन का आधार श्रीमद् भगवद्गीता का सार' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए उपायुक्त भ्राता धर्मपाल गुप्ता, न्यायमूर्ति भ्राता अमरनाथ जिन्दल, भारत विकास परिषद् प्रधान भ्राता धीरज, ब्र.कु.उषा बहन, ब्र.कु.बृज बहन तथा अन्य। **3.टिटवाला (मुम्बई)**- 'पीस पैलेस' का उद्घाटन करते हुए रिजेंसी निर्माण लि.के अध्यक्ष भ्राता महेश अग्रवाल, आयुक्त भ्राता गोविन्द फडके, ब्र.कु.सन्तोष बहन, ब्र.कु.सोम बहन, डिप्टी मेयर बहन अपेक्षा भोईर तथा ब्र.कु.हरीलाल भानुशाली। **4.बार्शी**- 'पारिवारिक समस्याओं का समाधान' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए महिला राष्ट्रवादी काँग्रेस जिलाध्यक्षा मंदाताई काळे, लायन्स क्लब अध्यक्षा बहन क्षमा पाटील, इन्नरव्हील क्लब अध्यक्षा बहन रक्षा देढ़िया, ब्र.कु.चक्रधारी बहन, ब्र.कु.लता बहन, ब्र.कु.सोमप्रभा बहन, ब्र.कु.संगीता बहन, ब्र.कु.महानंदा बहन तथा अन्य। **5.मोहाली**- 'खुशियाँ आपके द्वार' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.ओंकारचन्द भाई, ब्र.कु.प्रेमलता बहन, ए.एफ.पी.आई.के निदेशक मेजर जनरल भ्राता आई.पी.सिंह, ब्र.कु.रमा बहन तथा पूर्व जिला और सेशन जज भ्राता गुरचरण सिंह सरन। **6.जम्मू**- 'ग्लोबल इनलाइटनमेन्ट फॉर गोल्डन एज' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.रविन्द्र भाई, भाजपा राज्य अध्यक्ष भ्राता रविन्द्र रैना, ब्र.कु.सुदर्शन बहन तथा ब्र.कु.आशा बहन। **7.नारनौल**- 'शिक्षक-विद्यार्थी सम्बन्ध' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए विधायक डॉ.भ्राता अभय सिंह, ब्र.कु.उषा बहन, सी.आई.एस.एफ.के वरिष्ठ कमान्डेंट भ्राता शिव कुमार, सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर भ्राता दिनेश कुमार तथा अन्य। **8.मुंबई (पनवेल)**- 'बेहतर समाज का निर्माण' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ.कविता चौथमल, मेयर बहन चारूशीला घराट, डिप्टी मेयर डॉ.भ्राता गिरीश गुने, ब्र.कु.सन्तोष बहन, ब्र.कु.अमीरचंद भाई, ब्र.कु.प्रेम भाई, ब्र.कु.ओंकारचन्द भाई, ब्र.कु.तारा बहन तथा अन्य।

1.पानीपत (ज्ञानमानसरोवर)- सांस्कृतिक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए सांसद भ्राता रामकुमार कश्यप, ब्र.कु.सरला बहन, ब्र.कु.भारतभूषण भाई तथा अन्य। **2.मण्डी**- 'खुशनुमा जीवन' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.शीला बहन, ब्र.कु.रामप्रकाश भाई, ब्र.कु.नरेन्द्र भाई, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भ्राता पुनीत रघु तथा अन्य। **3.रोपड़**- 'खुशियाँ आपके द्वार' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.ओंकार चन्द भाई, ब्र.कु.प्रेमलता बहन, सी.पी.डब्ल्यू.डी. के मुख्य इंजिनियर भ्राता गुरबक्स सिंह, ब्र.कु.रमा बहन, प्राचार्य मेजर भ्राता जगमोहन सिंह, रोटरी क्लब के अध्यक्ष भ्राता भाटिया जी तथा अन्य। **4.पठानकोट**- सात अरब सत्कर्मों की महायोजना कार्यक्रम के अवसर पर ब्र.कु.रामप्रकाश भाई को सम्मानित करते हुए लायन क्लब के अध्यक्ष भ्राता यशपाल शर्मा, हिन्दू-सिख एकता क्लब के अध्यक्ष भ्राता निर्मल सिंह व चामुंडा समाज सेवा समिति के प्रधान जे.के.चोपड़ा। **5.बायजाबाई जेऊर (अहमदनगर)**- शिवस्मृति भवन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.मंजू बहन, ब्र.कु.राजेश्वरी बहन, विधायक भ्राता शिवाजीराव कर्डीले तथा अन्य। **6.पूना (बोपोडी)**- ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में मराठी पत्रकार परिषद् के राज्य अध्यक्ष भ्राता एस.एम.देशमुख, कोषाध्यक्ष भ्राता शरद पाबळे, ब्र.कु.लक्ष्मी बहन, ब्र.कु.अरुण भाई तथा सोमनाथ भाई। **7.सुन्दरनगर**- सात अरब सत्कर्मों का महाअभियान कार्यक्रम के उद्घाटन के बाद ब्र.कु.रामप्रकाश सिंगला भाई, ब्र.कु.शीला बहन, पत्रकार बंधु तथा अन्य भाई-बहनें समूह चित्र में। **8.येवला**- मराठा विद्या प्रसारक समाज के सर चिटणीस तथा नीलिमा ताई पवार का सत्कार करते हुए ब्र.कु.नीता बहन।

1.वडोदरा (मंजलपुर)- सेवाकेन्द्र के नए भवन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, पार्टीप्लाट के मालिक भीमाशंकर भाई, ब्र.कु.हंसा बहन, ब्र.कु.निरंजना बहन, ब्र.कु.शारदा बहन तथा अन्य। **2.सिरसा-** हरियाणा के मुख्यमंत्री भ्राता मनोहरलाल खट्टर जी को ईश्वरीय सेवाओं के बारे में जानकारी देते हुए ब्र.कु.प्रीति बहन। साथ में ब्र.कु.भ्राता सुभाष जी। **3.अम्बिकापुर-** छ.ग.के कैबिनेट मंत्री भ्राता टी.एस.सिंहदेव का शाल ओढ़ाकर सम्मान करते हुए ब्र.कु.विद्या बहन। **4.पणजी-** गोवा के कला तथा संस्कृति मंत्री भ्राता गोविन्द गावडे, ब्र.कु.शोभा बहन को एन.जी.ओ.'युवा' की ओर से सम्मानित करते हुए। **5.इंदौर-** ब्र.कु.रीना बहन को 'प्राइड ऑफ इंडिया' अवार्ड से सम्मानित करते हुए इंटरनेशनल म्यूजिक आइकॉन एवं डिस्को किंग भ्राता बप्पी लहरी। **6.इंदौर (प्रेमनगर)-** म.प्र.के उच्च शिक्षा मंत्री भ्राता जीतू पटवारी को पुष्प-गुच्छ देकर बधाई देते हुए ब्र.कु.शशि बहन। **7.महेश्वर-** म.प्र.की कैबिनेट मंत्री डॉ.विजयलक्ष्मी साधौ, ब्र.कु.अनिता बहन को स्वच्छता सर्वेक्षण ब्राण्ड एम्बेसडर्स के सम्मान-पत्र से सम्मानित करते हुए। **8.सोनई (अहमदनगर)-** ओलिंपिक सिल्वर मैडल विजेता बहन पी.वी.सिंधू को बी.डब्ल्यू एफ.वर्ल्ड टूर फाइनल में विजेता बनने वाली पहली भारतीय बनने पर 1300 गुलाबों से बना गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु.डॉ.दीपक हरके, ब्र.कु.उषा बहन तथा ब्र.कु.यश भाई। **9.भरतपुर-** राजस्थान के तकनीकी शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा राज्यमंत्री डॉ.भ्राता सुभाष गर्ग को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.कविता बहन। साथ में हैं ब्र.कु.अमर भाई। **10.इंदौर (ओमशान्ति भवन)-** ब्र.कु.ओमप्रकाश भाईजी की तृतीय पुण्यतिथि पर आयोजित स्मरणांजलि कार्यक्रम में ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु.आत्मप्रकाश भाई। मंचासीन हैं ब्र.कु.वेदांती बहन, ब्र.कु.कमला बहन, ब्र.कु.हेमलता बहन, ब्र.कु.आशा बहन, मेडिकेप्स कॉलेज के अध्यक्ष भ्राता रमेश मित्तल तथा अन्य।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2018-2020 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2018-2020. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : February, 2019.

भोपाल (नीलबड़)-
नवनिर्मित 'सुख-शान्ति भवन' का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु.अवधेश बहन, ब्र.कु.भूपाल भाई, ब्र.कु.हंसा बहन, ब्र.कु. नीता बहन तथा अन्य।

विशाखापट्टनम-
नवनिर्मित 'हारमनी हाऊस' का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु.सन्तोष बहन, ब्र.कु.कुलदीप बहन, ब्र.कु.हंसा बहन तथा अन्य।

जयपुर-
राजस्थान के मुख्यमंत्री भ्राता अशोक गहलोत जी को शॉल ओढ़ाने के बाद ईश्वरीय प्रसाद प्रदान करते हुए ब्र.कु.सुषमा बहन।

रायपुर-
छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भ्राता भूपेश बघेल जी को आत्म-स्मृति का तिलक लगाकर बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हुए ब्र.कु.कमला बहन।